RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. / भोपाल / 261 / 2015-17 प्रकाशन तिथि 25 सितम्बर 2015

बाल विज्ञान पत्रिका अक्टूबर 2015

चकमक

मूल्य ₹ 50

मची हाय रे दैया

विष्णुकान्त पाण्डे

घोड़ा नाचे हाथी नाचे
नाचे सोन चिरैया
किलक किलक कर बन्दर नाचे
भालू ताता थैया
ठुमक-ठुमक कर खरहा नाचे
ऊँट मेमना गैया
आ पहुँचा जब शेर नाचने
मची हाय रे दैया

चित्रः प्रशान्त सोनी

बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

अंक 349 अक्टूबर 2015

इस अंक में

2 एक गीत - मची हाय रे दैया/ विष्णुकान्त पाण्डे
4 बुलबुल और कौआ / सनत कुमार घोष
6 गाँधी जी का जन्तर
9 माथापच्ची
10 बर तन में इक मन है / मुदिता भण्डारी
12 आकाश /अरुण कमल
13 पहेली :गरम चाय की पहेली /मनीष जैन
14 गाता हुआ लड़का / मंगलेश ड़बराल
16 करेजवा / वरुण ग्रोवर
20 पेड़ों के गीत / सुशील शुक्ल
22 तीन कथाएँ
23 बोली रंगोली / गुलज़ार
26 पानी पानी है
28 दोस्त / शशिकिरण
32-35 मेरा पन्ना
36 द्रिघान्चु / सुकुमार राय
38 मगरमच्छों का बसेरा / जसबीर भुल्लर
42 समझ नहीं आता / सतीनाथ षडंगी (सत्यू)
44 होती गर मैं मुनिया सजीले वन की / रूथ रस्तोगी और एक गिलहरी
47 फनी पाठशाला / इरफान
48 चित्रपहेली / कविता तिवारी

एक गीत

महुआ तोहे रोटी कहूँ कि पानी
तू ही हम सबकी ज़िन्दगानी
महुआ तोहे रोटी कहूँ कि पानी...

तेरो ही तो नोट गिनावे
तेरो ही पीवें पानी
महुआ तोहे रोटी कहूँ कि पानी...

तू ही हमें है नाच-नचावे
तू ही फिराए आनी-घानी
महुआ तोहे रोटी कहूँ कि पानी...

तेरे ही पीछे कोरट-कचेरी
तूने बिगाड़ दई ज़िन्दगानी
महुआ तोहे रोटी कहूँ कि पानी...

- घनश्याम तिवारी

आवरण चित्र
हरिहरन, 12 साल,
मरुदम स्कूल,
तमिलनाडु

हाशिए के चित्र
प्रशान्त सोनी

डिज़ाइन
दिलीप चिंचालकर

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सहायक सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
सोमेश दास

सहयोग
वरुण ग्रोवर
प्रभात
मिहिर
कमलेश यादव

एक प्रति :	50.00
वार्षिक :	500.00
तीन साल :	1350.00
आजीवन :	6000.00

सभी डाक खर्च हम देंगे।

विप्रो एप्लाइंग थॉट इन स्कूल्स के वित्तीय सहयोग से विकसित

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण- बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृप्या खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 462 016, फोनः (0755) 4252927, 2550976, 2671017
फैक्सः (0755) 2551108, e mail - chakmak@eklavya.in, e mail - circulation@eklavya.in, www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

उस दिन इतवार था। दोपहर का वक्त। मैं अपनी पत्नी के साथ छत पर टहल रहा था। ऐसा अकसर होता। हम छत पर खड़े आसपास के पेड़ों को देखते। हम बातें कर रहे थे पर हमारी निगाहें आसपास दौड़ रही थीं।

सनत कुमार घोष
(शिबपुर, हावड़ा)

बुलबुल, और कौवा

अचानक मेरी पत्नी की निगाह एक पेड़ पर गई। वहाँ एक बुलबुल थी जो काफी परेशानी में लग रही थी। हमने गौर से देखा तो पाया कि वो पेड़ से लटकती पतंग की डोर से बँध गई है।

वो खुद को छुड़ाने की जितनी कोशिश कर रही थी, और फँसती जा रही थी। हम दोनों परेशान हो गए। हम जानते थे कि पतंग के माँजे को मज़बूत करने के लिए उसमें पिसे काँच का लेप लगाया जाता है। इसलिए वो जितना फड़फड़ाएगी उसके पंख कटने की आशंका बढ़ती जाएगी।

हम सोच ही रहे थे कि क्या करें, कैसे उसे बचाएँ कि एक कौआ उड़ता हुआ उसी डाल पर आ बैठा। बुलबुल से कुछ दूर। फिर वो उसके पास आ गया। बुलबुल का फड़फड़ाना कुछ रुका। अचानक कौआ उड़कर उसके एकदम पास आ गया। वहाँ वो कुछ करने लगा जो हमारी समझ के परे था।

हम छत पर इस कोने से उस कोने में घूम-घूमकर अन्दाज़ लगाने लगे कि वो कर क्या रहा है। और फिर जो देखा तो मन तसल्ली और खुशी से भर गया। वो अपनी चोंच से ठोंक-ठोंक कर धागे को काट रहा था। थोड़ी देर में धागा कट गया और बुलबुल झट-से उड़ गई।

हम मंत्रमुग्ध से खड़े इस अद्भुत किस्से को घटता देखते रहे...

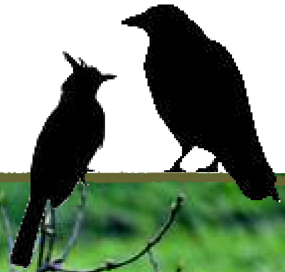

गाँधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूँ। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम तुम पर हावी हो रहा हो तो यह कसौटी आज़माओ –

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो उसकी शक्ल याद करो। और अपने दिल से पूछो कि जो कदम तुम उठाने जा रहे हो यह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा? क्या इस कदम से उसे कुछ लाभ होगा? क्या इससे वह अपने जीवन और भाग्य पर कुछ काबू पा सकेगा?

तुम देखोगे तुम्हारा सन्देह मिट रहा है। और अहम खत्म हो रहा है।

महात्मा गाँधी!
सुनकर मन में, दिमाग में क्या आता है?
यह सवाल हमने सैंकड़ों लोगों से पूछा। तुम्हारे मन में यह नाम सुनते ही क्या आता है?

अहिंसा
हे राम
बापू
चश्मा
सादगी
नोट
तीन बन्दर
चरखा
कमर घड़ी
जंतर
वकालत
करो या मरो
गँजा
साधारणपन
नमक
धोती
तेज़ चाल
करुणा

स्वाधीनता
दूसरा गाल
एक बूढ़ा जवान
लगे रहो मुन्ना भाई
हरिजन
आदमी
सन्त
सादा
बहिष्कार
सँडास की सफाई
साबरमती
प्रेम
भारत छोड़ो
पोरबन्दर
बा
असहयोग
अडिग
फीनिक्स
टॉलस्टॉय
लाठी
विरोध
बकरी
आज़ादी
अधनंगा आदमी

अथर्व, दूसरी, डीपीएस तापी

रामरति बाई – वे आते थे तो भीड़ लगती थी। पंचायत बैठती थी। उनके ज़माने में चीज़ें सस्ती थीं।

(शायद वे राजीव गाँधी को याद कर रही थीं।)

करुणा
दाण्डी यात्रा
सादगी
कुशल राजनेता (जन नेता)
हँसते हुए बच्चे के साथ गाँधी जी
गाँधी जी जहाँ हो वाले पते वाला आदमी
महात्मा गाँधी याद आते हैं और क्या!

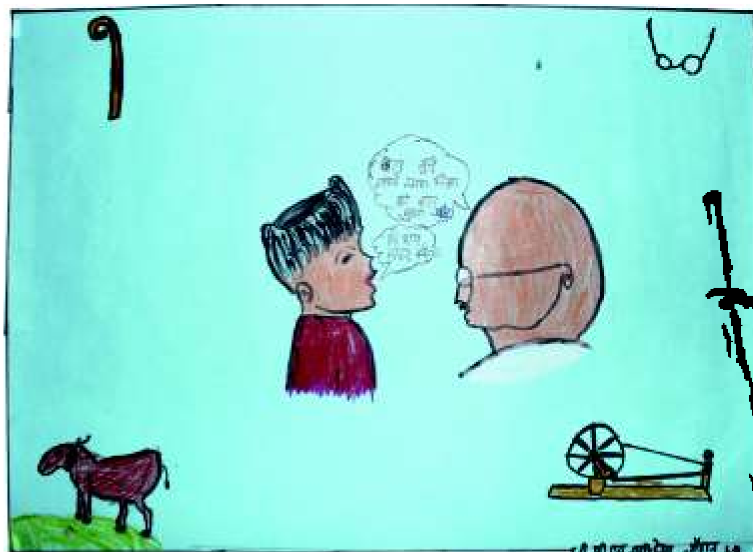

हिसा चौहान, चौथी, डीपीएस तापी

एक दुर्बल आदमी
धोती-गमछी लपेटे
सत्य की इतनी बड़ी
लड़ाई लड़ सकता
है। कैसे इतना
सत्यार्थी वर्ण
व्यवस्था को उचित
ठहरा सकता है?

- अनुज लगुन

उन्होंने असत्य को न कहा और अपनी ऐसी-ऐसी पोल खोलीं कि क्या कोई दुश्मन खोलता....और उनका कद और बड़ा हो गया। उन्होंने हिंसा को न कहा और मार खानेवाली एक ऐसी फौज़ खड़ी कर दी जिससे मारने वाली सेना हार गई। उन्होंने नास्तिकता को न कहा और सबसे बड़ा धर्म निरपेक्ष राष्ट्र खड़ा कर दिया। .....वह एक चालाक योद्धा और चतुर रणनीतिकार थे। गाँधी एक जीवित चमत्कार थे!

– स्वयंप्रकाश

समरजीत पटेल -
सुदेसी, दूसरे गाल पर थप्पड़

तुलसीराम -
अच्छे आदमी थे,
गरीबों का ध्यान रखते थे।

छोटी बाई - उन्होंने हमें अँग्रेज़ों के अत्याचारों से मुक्त कराया। खूब लड़ाई लड़ी। अच्छे आदमी थे। (फिर कुछ मायूस होकर कहती हैं) पता नहीं किन लोगों को अत्याचारों से मुक्त कराया था। हमें तो दिन-रात वही झेलना पड़ता है।

साफ-सफाई का काम गाँधी ने दक्षिण अफ्रीका में सीखा था। तीन वर्ष बाद वे अपनी पत्नी और लड़कों को लेने के लिए भारत आए हुए थे। उस समय बम्बई प्रेसीडेंसी में प्लेग फैला हुआ था। राजकोट में भी प्लेग फैलने की आशंका थी। तत्काल गाँधी राजकोट में सफाई के काम में जुट गए। घर-घर जाकर उन्होंने सँडासों को साफ रखने की ज़रूरत समझाई। अँधेरे, गन्दे, बदबूदार और कीड़ों से भरे सँडासों को देखकर वे घबरा उठे। कुछ घरों में सँडास थे भी नहीं और नालियों को ही टट्टी-पेशाब करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। वहाँ की दुर्गन्ध असहनीय थी। बड़े लोगों के मुकाबले गरीब अछूतों के घर ज़्यादा साफ थे। उन्होंने सफाई के बारे में गाँधी की बात को खुशी से मान लिया। गाँधी ने सुझाव दिया कि पेशाब और पाखाने के लिए दो अलग-अलग बालटियों का इस्तेमाल किया जाए। ऐसा करने से सफाई में काफी सुधर हुआ।

राजकोट में गाँधी का परिवार काफी प्रतिष्ठित था। उनके पिता और दादा राजकोट और आसपास की रियासतों में दीवान रह चुके थे। इन दिनों राज्य के दीवान के बैरिस्टर पुत्र के लिए अपने बाप-दादों के शहर में घर-घर जाकर वहाँ नाली, पाखानों की सफाई करना मामूली बात न थी। मगर संकट की घड़ी में गाँधी ऐसा साहस दिखाने में कभी नहीं चूके।

कथन पालनपुरिया, तीसरी, डीपीएस तापी

एक बार एक विदेशी ने गाँधी से पूछा, "यदि आपको एक दिन के लिए भारत का बड़ा लाट साहब बना दिया जाए तो आप क्या करेंगे?"

गाँधी ने कहा, "स्वीपरों की जो गन्दी बस्ती है मैं उसे साफ करूँगा।"

मान लीजिए कि आपको एक और दिन उस पद पर रहने दिया जाए, तब...

"दूसरे दिन भी वही करूँगा।"

(*बहरूप गाँधी* का एक अंश)

मनोहर लाल चौरसिया - महात्मा, महात्मा

कैलाश पटेल - ये हम यहाँ आज़ादी से गुमठी लगाए हैं ये गाँधी जी की बदौलत ही हुआ है।

महेन्द्र रजक - सच्चे राजनेता। आज के ढोंगियों जैसे नहीं। *(गाँधी होते तो कहकर उन्होंने सौ बातें गिनाईं जो नहीं हो सकती थीं।)*

अजय सिंह - साफ-सफाई

धनराज - बच्चों से प्रेम, कपड़े पहनना तो हमें उन्होंने ही सिखाया है।

राधेश्याम पांडे - भैय्या हम तो यू पी के हैं, हमें नहीं पता।

माथापच्ची

1 एक बरतन में नींबू का शरबत रखा है जिसमें 3 भाग पानी और 5 भाग नींबू का रस है। बरतन में से कितना हिस्सा शरबत निकालकर उसकी जगह पानी डालें कि शरबत में नींबू और पानी दोनों की मात्रा आधी-आधी हो जाए?

2 क्या तुम एक चौकोर को 13 बराबर भागों में बाँट सकते हो?

3 तुम्हारे पास 25 घोड़े हैं। तुम्हें उनमें से सबसे तेज़ दौड़नेवाले 3 घोड़ों को तलाशना है। एक बार में ज़्यादा से ज़्यादा 5 घोड़ों की दौड़ करवाई जा सकती है। ऐसे 3 घोड़ों को तलाशने के लिए तुम्हें कम से कम कितनी दौड़ करवानी होंगी?

4

नीचे दिए कथनों में से 3 कथन गलत हैं तो आखिर गिलास तोड़ा किसने?

1. सारा: रेहान ने तोड़ा है।
2. रेहान: सारा ने तोड़ा है।
3. साहिल: रेहान सच बोल रहा है।
4. जेसिका: साहिल झूठ नहीं बोल रहा है।

5 गाँव में एक कत्ल हुआ। इंस्पेक्टर ने हवलदारों से वहाँ जाकर रिर्पोट लिखने को कहा। बारिश का मौसम था। हवलदारों ने गाँव जाने में आलस किया और झूठी रिर्पोट बना दी। अगले दिन जब इंस्पेक्टर ने रिर्पोट देखी तो वह फौरन समझ गया कि रिर्पोट झूठी है। क्या तुम बता सकते हो कि इस रिर्पोट में ऐसा क्या है जिससे इंस्पेक्टर समझ गया कि रिर्पोट झूठी है? रिर्पोट कुछ यूँ थी:

“जब हम वहाँ पहुँचे तो दरवाज़ा खुला हुआ था और 40-45 साल का एक आदमी कुर्सी पर मरा पड़ा था। कमरे में एक बल्ब जला हुआ था और पंखा चल रहा था। सामने एक मेज़ था जिस पर एक ज़हर की शीशी, पानी से आधी भरी एक बोतल, एक पेन और एक अखबार रखा था जिसमें 9 और 10 नम्बर के पेज खुले थे। मेज पर एक कैलेण्डर भी था जो 20 जून की तारीख दिखा रहा था। कमरे में 5 रुपए का एक सिक्का, एक कॉपी और एक बिस्तर भी था। ऐसा लग रहा था कि उस आदमी ने आत्महत्या की थी।”

चित्र : दिलीप चिंचालकर

बरतन में इकमन है

उर्फ एक शिल्प के बनने की कहानी...

मुदिता भण्डारी

बर्तन शब्द सुनते ही दिमाग में क्या आता है?

मैं मिट्टी के शिल्प बनाती हूँ। अगर मुझे कोई बर्तन बनाना हो तो क्या यह ज़रूरी है कि मैं एक कटोरा या खोखला आकार ही बनाऊँ?

मेरे लिए बर्तन शब्द का मतलब है – किसी चीज़ को खुद में समेटे रखना... हम इंसान बर्तन की तरह ही तो हैं... एक ऐसा बर्तन जो अपने अन्दर कई भावनाएँ, सम्वेदनाएँ, विचार, सपने, यादें, आशाएँ ...सब समेटे रहता है।

घट घट में पंछी बोलता
आप ही डंडी आप तराज़ू
आप ही बैठा तोलता

हर क्षण हमें कुछ न कुछ अनुभव होते रहते हैं...कभी किसी पेड़ से नीम की पत्तियों को झड़ते हुए देखते हैं या कभी पीपल की पत्तों से छिटकती सूरज की रोशनी देखते हैं। या कभी पहली बारिश के बाद मिट्टी की गंध का अहसास करते हैं...हमें अच्छा लगता है। ऐसी तमाम यादें हैं जो रह-रह कर हमसे जुड़ती जाती हैं। हमारे अंदर ही समाई रहती हैं? जब हम पैदा होते हैं तब तो हम नहीं जानते हैं कि गणित के पर्चे के पहले का टेंशन क्या होता है। धीरे-धीरे अनुभव शुरू होते हैं और हम अच्छी और बुरी भावनाओं को पहचानने लगते हैं...हम राहत के भाव को भी पहचानने लगते हैं क्योंकि ये सारी भावनाएँ समय के साथ हमारे भीतर आ चुकी हैं।

तो क्या हम अपने आप में बर्तन नहीं हैं? बस यही सोचकर मैंने इस विषय पर काम करना चालू किया।

गुरु कुम्हार सिस कुम्भ है
गढ़ गढ़ काढ़ै खोट
अंतर हाथ सहार दे
बाहर मारे चोट

पहला आकार जो मेरे दिमाग में आया वह था एक गोला जिसमें दीवारें हों ... हाथ में थोड़ी मिट्टी लेकर मैंने उसे दबा-दबा कर गोल आकार दिया। फिर थोड़ी और मिट्टी लेकर उसमें अन्दर दीवारें बनाईं। अब गोले के अन्दर दीवारों का क्या मतलब? क्या कई बार हम बहुत-सी चीज़ों को आज़माए बिना ही पीछे हट जाते हैं?...क्या यह सुनी-सुनाई बातों का असर है? या नया आज़माने का डर?...कई लोग कुछ सब्ज़ियाँ नहीं खाते हैं – ऐसा भी नहीं कि उन्होंने इन सब्ज़ियों को कभी चखा हो।... तो यह सब डर और झिझक हमने कहीं न कहीं से अपने भीतर जमा की है..बस ये दीवारें इसी डर और झिझक को दिखाती हैं।... इन्हीं डरों के भीतर एक छोटी-सी खिड़की से हमें रोशनी दिखती है।...

मैंने यह गोल आकार का काम किया जिसमें अलग-अलग आकार की दीवारें बनाईं और छोटे-छोटे छेद करके रोशनी के अन्दर आने की जगह बनाई।

यह तन काचा कुम्भ है
लियाँ फिरे था साथ
ढबका लागा फूट गया
कछु न आया हाथ

जल में कुम्भ
कुम्भ में जल है
बाहर भीतर पानी
फूटा कुम्भ जल जल ही न समाना
ये तत पूछे ज्ञानी
(तत - तत्व या सार)

अगर मैंने सिर्फ एक कटोरीनुमा बर्तन बना दिया होता तो?

चित्रः विदुषि यादव

आकाश

अरुण कमल

आकाश गहरा नीला था। जैसे टेलिविज़न का पर्दा जब कोई कार्यक्रम न आ रहा हो, पर टी.वी. चालू हो। इतना नीला। ऐसा नीलापन हमेशा नहीं मिलता। अगर मुझे कोई कहे कि पूरी ज़िन्दगी तुम्हें अपने कमरे से बस एक ही चीज़ देखनी पड़े तो क्या देखोगे? मैं कहूँगा, "आकाश। आसमान।" लगातार बदलता हुआ। लगातार अलग-अलग रूपों, रंगों, भावों में बनता-बिचरता हुआ। किसी ने आज तक एक ही आसमान को दुबारा नहीं देखा। नदी में भी उसी नदी, उसी धारा में हम दुबारा नहीं हेलते। लेकिन नदी में कुछ भी स्पष्ट बदला या बदलता नहीं दिखता जबकि आसमान निरन्तर बदलता हुआ दिखता है। भोर के बिलकुल सुनसान, खोए-खोए से, भूरे आसमान से लेकर मध्य रात्रि के तारों भरे, तारों के रोर और शोर से भरे आसमान तक – कितने-कितने रंग और रूप हैं। केलिडोस्कोप से भी ज़्यादा। पौ फटती है और पूरब का आसमान लाल होता है। लाल रंग इतनी-इतनी तरह का। मैंने एक बार समुद्र के छोर पर, क्षितिज पर, सूर्य को उगते देखा था। अचानक जैसे आकाश ने उसे उठा लिया और लेकर दौड़ा। और फिर शाम को सूर्य का डूबना। आसमान इन दो क्षणों में सबसे ज़्यादा व्यस्त होता है। शाम को सूर्य बहुत धैर्य के साथ नीचे उतरता है। पूरे पश्चिम आकाश में लालिमा का थक्का। लाली की लपक। लाल सूर्य सहसा गुम। दुनिया भर में सबसे ज़्यादा सूर्योदय और सूर्यास्त के वक्त लोग आसमान को देखते हैं। लेकिन मैं तो हमेशा देखना चाहता हूँ बादलों से भरा आसमान। रंग-रंग के बादल। बिलकुल रूई-से धवल उड़े जा रहे बादल। श्याम, काले, घने बादल धरती पर झुके आ रहे। आसमान कहीं पीछे होगा। लेकिन यही तो आसमान है। अचानक तड़ित की कौंध और आसमान पर तेज़ लकीर। और घनघोर बारिश। बादलों का घर आसमान में है। वे वहीं खेलते रहते हैं। एक बार मैं हवाई जहाज़ से बहुत ऊपर गया। लेकिन वहाँ भी आसमान था। और मैंने देखा ढेर के ढेर बादल मेमनों की तरह वहाँ सो रहे थे। एक बार मैं मेघालय में शिलाँग भी गया। अरे, वहाँ तो पूरे आकाश पर बादलों का कब्ज़ा था और बादल चारों तरफ मेरे साथ-साथ घूम रहे थे। लगता था मैं भी आसमान हूँ। जेब में हाथ डाला तो वहाँ भी एक बादल था। आसमान तो बादलों का मैदान है। और दिन में जब धूप होती है तो पूरा आसमान परिन्दों से भर जाता है। दूर-दूर तक ऊपर ये पक्षी दौड़ते रहते हैं।

एक बार मैं हरी घास पर चित्त लेटाकर आकाश को ताकता रहा। लगा आकाश मुझे बुला रहा है। लगा वह मुझ पर झुका आ रहा है। एक चिड़िया उठती-उठती दूर चली गई। पक्षियों का एक झुण्ड एक लय में नाचता रहा। हवा चली और बादलों का एक जत्था तेज़ी से गुज़र गया। सूर्यास्त के बाद आसमान कितना अकेला लगता है। तभी एक तारा छिटकता है। पूरे आसमान में एक अकेला तारा। और फिर तारे। तारे। चमचम। रोशनी की धूल। और साफ आकाश में दूध की फेन भरी धारा। आकाशगंगा। इतने तारे क्यों हैं? और बस एक चाँद। सिक्के-सा चमकता। क्या है इस सिक्के का दूसरा पहलू? चाँद जो आसमान में दूर उठकर चमकता है। पूर्णिमा का चाँद। मेरे साथ-साथ चलता। मैं जिधर जाता उधर ही जाता। रात में खुले में चाँद के नीचे चारपाई पर चित्त लेटकर ताकते रहना। शीतल। चाँद चलता जाता। आकाश बहुत मुलायम, शान्त लगता।

कभी-कभी सोचता हूँ एक ही आसमान में सूरज, चाँद, तारे, बादल, बिजली और इतने सारे रंग क्यों हैं? और यह आसमान सबका है। सबके माथे पर थोड़ा-सा आसमान होना ही चाहिए। मेरी तो इच्छा है कि एक ही साथ आसमान में एक तरफ सूरज हो और दूसरी तरफ चन्द्रमा। इधर देखूँगा तो दिन, उधर देखूँ तो रात। दिन और रात एक साथ। इच्छा तो यह भी है कि आसमान में एक ही साथ सूरज, चाँद, तारे, बादल, धूप और सारे रंग हों। मैं आसमान को छूना चाहता हूँ। तब मेरी देह में सारे रंग लग जाएँगे। मैं पतंग की तरह उड़ूँगा। पक्षी की तरह। आसमान के तारे की तरह चमकता रहूँगा। अगर मुझसे कोई पूछे कि अपने जीवन में सबसे ज़्यादा क्या देखा तो मैं कहूँगा – आसमान।

चकमक

पहेली

गर्म चाय की पहेली...

मनीष जैन

चित्र : दिलीप चिंचालकर

कुछ समय पहले की बात है। कैंटीन में चाय पर एक मित्र सौरभ के साथ चर्चा चल रही थी। मैं चाय नहीं पीता था इसलिए मेरे पास खस का शरबत था।

हम दोनों के गिलास 100 मिलीलीटर के थे। और दोनों में 90-90 मिलीलीटर चाय और शरबत था। मैंने प्रस्ताव रखा कि क्यों न मैं सौरभ की चाय में शरबत मिला दूँ और वो मेरे शरबत में चाय। लिहाज़ा मैंने सौरभ के गिलास में शर्बत मिलाकर उसे पूरा भर दिया। और फिर उस घोल को अपने गिलास में डाल दिया। ऐसा करने के बाद हमारे गिलास फिर से 90 मिलीलीटर भरे हुए थे।

अब सवाल ये है कि मेरे गिलास में चाय ज़्यादा थी या सौरभ के गिलास में शरबत? ये ही सिलसिला हमने दो बार करा होता तो क्या होता? तब मेरे गिलास में चाय ज़्यादा होती या सौरभ के गिलास में शरबत?

चकमक

गाता हुआ लड़का

मंगलेश डबराल

दिल्ली में वह एक उमस का दिन था
बारह-तेरह बरस का लड़का
भीड़ भरी बस में गाता था एक खुशी का मीठा गाना
गले में नन्हा हरमोनियम लटकाए
उसकी चारेक बरस की बहन माँगती थी पैसा
मुसाफिरों से घूम-घूमकर
जैसे वह भी एक खेल हो उसके बचपन का

लड़का बीच-बीच में उसे डाँटता अपने पास बुलाता था
कहीं गिर न जाए वह नीचे चलती बस से
वह बार-बार ऊपर करता अपनी फटी पैन्ट को
जो नीचे को खिसक रही थी
फिर भरपूर गले से गाता था
किसी विकल राग के कच्चे-पक्के सुर
जिनमें नदियाँ बहती थीं पहाड़ पिघलते थे
जो बस की गर्मी और ऊँघकर जगे मुसाफिरों के ऊपर
बादल की-सी छाया देते थे

उसके गाने से चुप हो गया वह फिल्मी गाना
जो दिल्ली की बस में
कानफोड़ अश्लील ढंग से रोज़ बजा करता है
यात्री देख रहे थे अचरज से

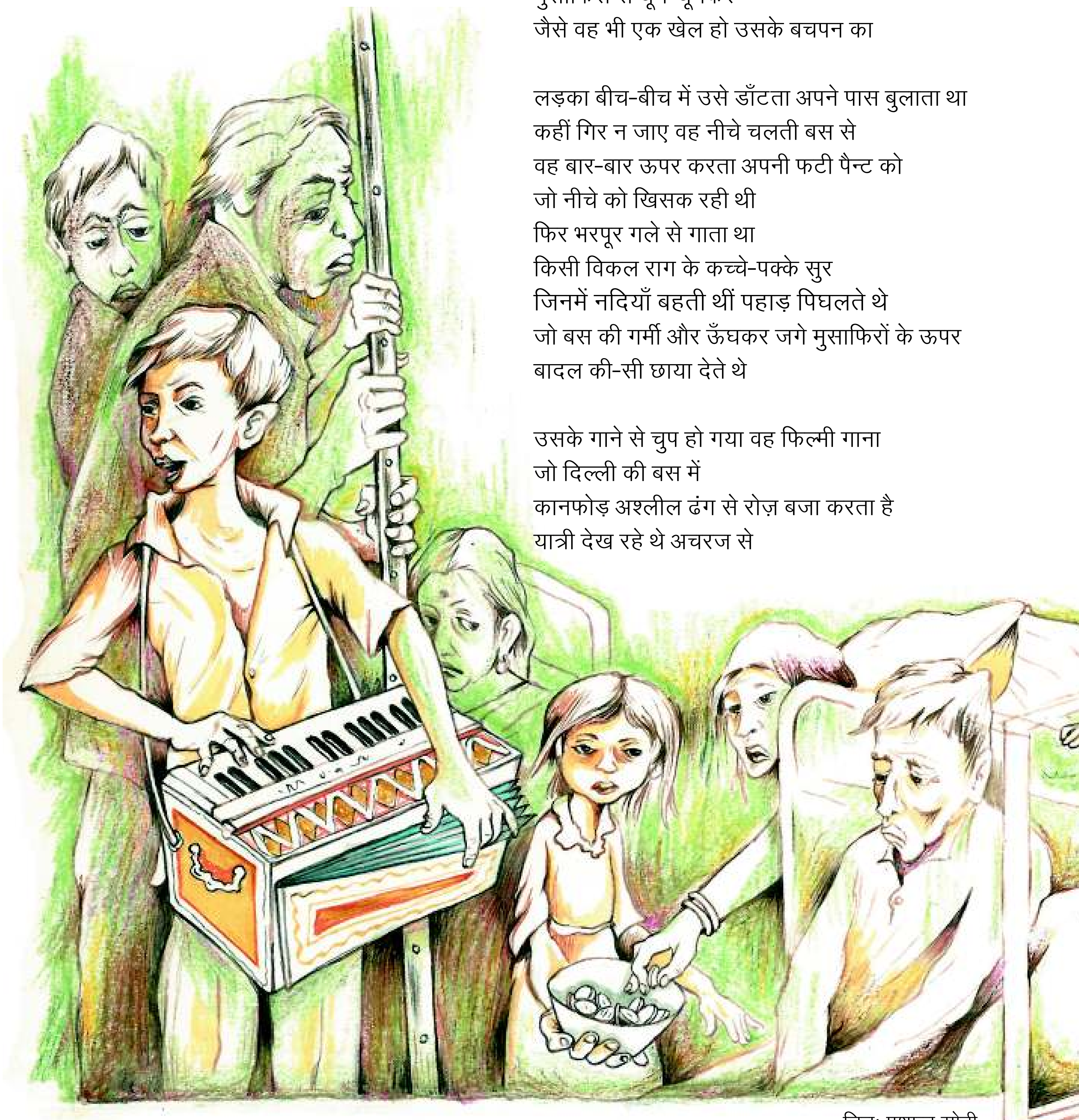

चित्रः प्रशान्त सोनी

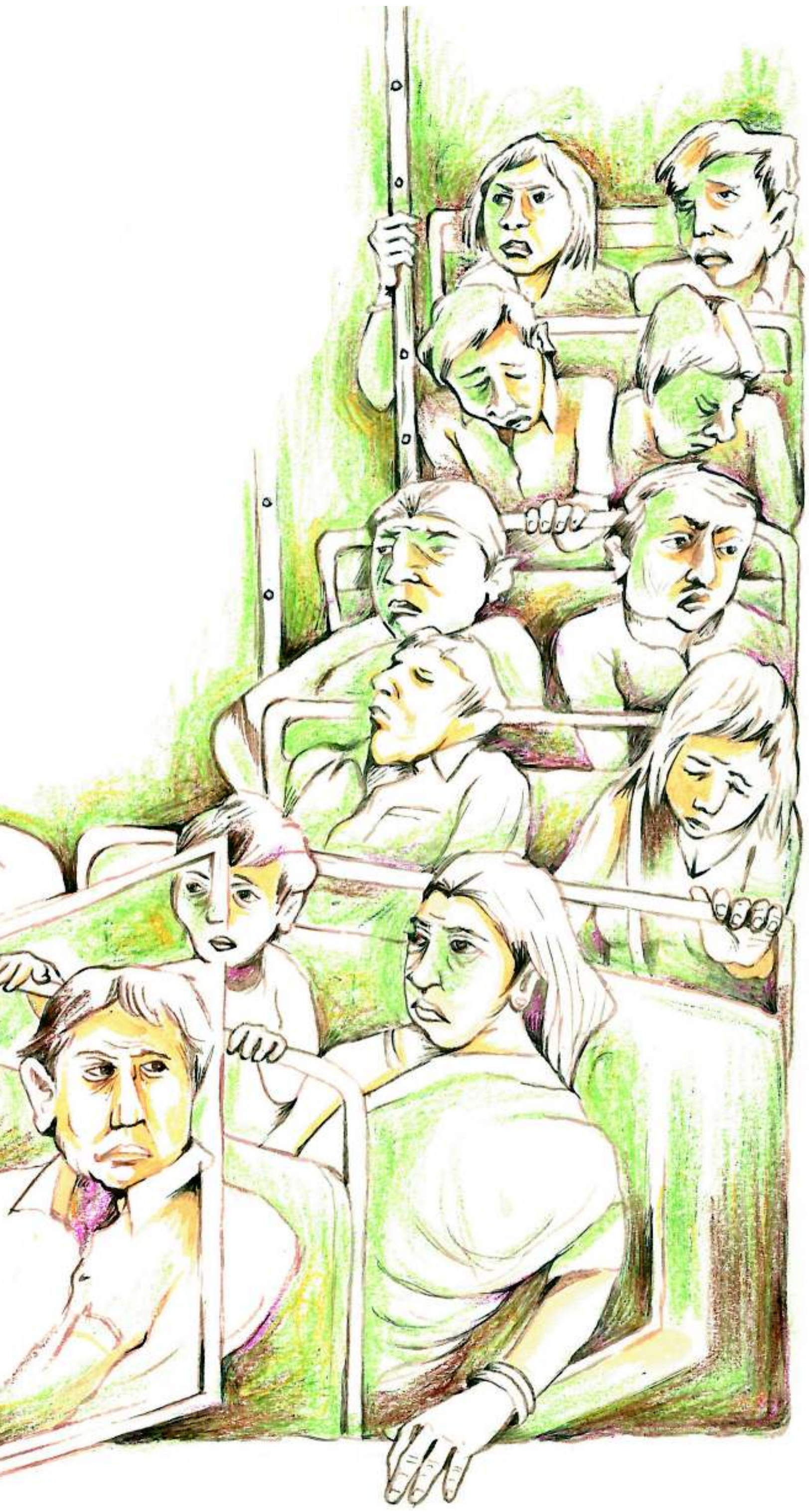

उस नन्हे दीन-हीन को
टूटे थे जिसकी कमीज के
बटन किसी औलिया जैसे
और वह गाता था उस्ताद सरीखा
जैसे गाता हो अपनी ही खातिर
अपने ही भीतर
पर उसकी बहना अपना काम नहीं भूली थी
भाई के गाने के एवज़ में
आखिर मिल ही गये उसे कुछ पैसे
कुछ महिलाओं ने उस पर खास दया दिखलाई

मैंने भी झेंप मिटाने को रक्खा एक रुपैया उसके
गूँज रहे हारमोनियम पर
मुझे पता था भीख गरीब को
और गिरा देती है नीचे
और इसलिए ज़्यादा नीचे गिरने से पहले ही
लड़का बस से उतर गया बहन का हाथ खींचकर
शायद किसी और बस में
उस गाने के कुछ गाहक मिल जाएँगे
जिसको गा-गाकर
कितने ही सफर किए होंगे उसने
आए याद मुझे पंडित भीमसेन जोशी
आज के बड़े प्रतापी गायक जो भागे थे घर से
संगीत सीखने जब वे ग्यारह के थे
क्या यह लड़का भी निकला होगा इसी तरह
वह गया हुआ ओझल
रास्ते भर रही मेरे साथ वह मीठी धुन
जिसमें उम्मीदें थीं और खुशी थी
इस तरह महज़ एक रुपैये में मिली मुझे कविता
घर आकर मैंने वह धुन गायी मन में और रो पड़ा।

करेजवा

वरुण ग्रोवर

दुनिया खत्म होने वाली है। बस आधा घण्टा बचा है। पिंटू भी जानता है कि आधा घण्टा ही बचा है। उसे समझ नहीं आ रहा कि वो खुद से बाज़ार जा के अपनी ज़िन्दगी का आखरी गुलाबजामुन खा ले या मम्मी-पापा के लौटने का इन्तज़ार करे। मम्मी-पापा को अब तक आ जाना चाहिए था। उन्होंने कहा था वो पक्का आ जाएँगे। दादी माँ ने दोपहर से शोर मचा दिया था कि उन्हें जाते-जाते गंगा के दर्शन करने हैं। अब सड़कों पर इतनी भीड़ है कि लगता नहीं मम्मी-पापा वापस आ पाएँगे। बस आधा घण्टा और...

सुबह से टीवी पर बता रहे हैं कि शाम 6 बजकर 12 मिनट पर एक बहुत बड़ा सितारा पृथ्वी की बगल से गुज़रेगा। इस सितारे का नाम है ITR-688, वैसे न्यूज़वाले इसे 6 महीनों से डैथ-स्टार या मृत्यु तारा कह रहे हैं। असल में वैज्ञानिकों का कहना है यह सितारा है भी नहीं। बहुत से विचित्र लक्षणोंवाला यह सितारा असल में एक मृत ब्लैक होल है। (ब्लैक होल माने एक सितारे के जीवन काल का अन्तिम पड़ाव जहाँ उसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति इतनी बढ़ जाती है कि कोई भी चीज़ उस से बच नहीं सकती। यहाँ तक कि रोशनी भी उसमें समा जाती है और कभी बाहर नहीं आती।) कहीं दूर के किसी ब्लैक होल से निकलनेवाले हॉकिंग विकरण कम हो गए होंगे और वो भौतिकी के मूलभूत सिद्धान्त छोड़छाड़ के एक छुट्टा साँड बन गया होगा, ऐसा वैज्ञानिकों का अन्देशा है। जैसे ही ये सितारा हमारे बगल में आएगा, दुनिया की हर शय को जोड़ के रखनेवाला ऐटमी बल, प्रोटोन और इलेक्ट्रॉन के बीच का आकर्षण, खत्म हो जाएगा। तीन सेकंड। सिर्फ तीन सेकंड लगेंगे ITR-688 को पृथ्वी पार करने में और उन्हीं तीन सेकंड में हम सब बिखर जाएँगे। बहुत ही रोमांचक तीन सेकंड होंगे ये। पहले ही सेकंड में ऐटमी बल खत्म होने से हम सब ऐसे खुल के गिरेंगे जैसे कँचों से ठसाठस भरी बोरी को कोई उल्टा पलट दे। इंसान, जानवर, पेड़, धातु, प्लास्टिक सब – प्रोटोन और इलेक्ट्रॉन में बदल जाएँगे। दूसरे सेकंड में इस प्रक्रिया से इतनी ऊर्जा निकलेगी कि अगल-बगल के निर्दोष ग्रह – शुक्र और मंगल भी झुलस जाएँगे। उस सेकंड में मंगल का तापमान 186 डिग्री सेल्सियस बढ़ जाएगा और मंगल को अपने पुराने तापमान (दिन में) 20 डिग्री पर पहुँचने में सात साल लगेंगे।

पापा शुरू-शुरू में बहुत हँसते थे इस खबर पर। पिंटू भी साथ में हँसता था। पिंटू के स्कूल के टीचर भी। नन्दलाल सर तो कहते थे टीवी ही देखना बन्द कर दो। आज समझ आ रहा होगा नन्दलाल सर को! खिड़की से मुण्डी बाहर निकालो तो वो सितारा आता हुआ दिखता है। जैसे चाँद को किसी ने हवा भर के 50 गुना बड़ा कर दिया हो। दो दिन पहले तक भी कोई मानने को तैयार नहीं था जबकि दिसम्बर में भी जून जैसी गर्मी हो गई थी। लेकिन कल दोपहर से तारा साफ दिखना शुरू हुआ (सबसे पहले *आज न्यूज़* वालों ने दिखाया!) और तब से तेज़ी से बड़ा ही होता जा रहा है। इसलिए आज सुबह पापा ने कहा कि सब अपनी-अपनी अन्तिम इच्छा बता दो, वो पूरी करने की कोशिश करेंगे। मम्मी बोलीं कि उन्हें अपने बचपन का स्कूल देखना है। तो सुबह सब लोग बसन्ता स्कूल गए। मम्मी अपनी पुरानी क्लास में गईं, पुरानी बेंच पर बैठीं और उस पर कुरेदे हुए सैकड़ों नामों में से अपना नाम खोज निकाला। मम्मी ने सबको बताया कि ये नाम उन्होंने एक लड़के के लिए कुरेदा था लेकिन अब उन्हें उस लड़के का नाम तक याद नहीं। पापा की अन्तिम इच्छा थी कि वो घर आके सबको खिचड़ी बना के खिलाएँ। दादी की पहले कोई इच्छा नहीं थी लेकिन दोपहर को खिचड़ी खाने के बाद उन्होंने बोला कि गंगा स्नान करना है। और पिंटू ने कहा कि उसे गुलाबजामुन खाना है।

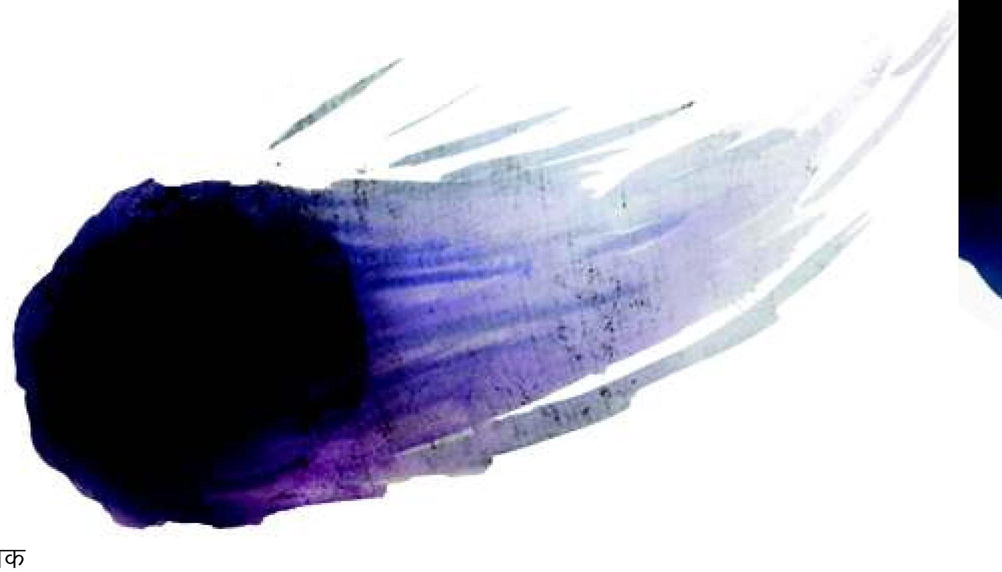

पापा ने कहा था, “हाँ पक्का खिलाएँगे तुमको। करेजवा खिलाएँगे पाण्डेपुर चौमानीवाला।” करेजवा वो गुलाबजामुन है जो कलेजे जितना नाज़ुक और रसीला है। हलवाई ग्राहकों से शर्त लगाते हैं कि प्लेट से उठाकर मुँह तक ले जाने में यह टूट न जाए तो इसके पैसे मत देना। कुछ शातिर लोग जो यह शर्त जीत चुके हैं वो कहते हैं कि अगर तीन सेकंड में खा लिया तो नहीं टूटेगा। शर्त जीते या हारे लेकिन पिंटू का बड़ा मन था आज टूटने से पहले एक करेजवा खाने का। पर पापा मम्मी तो दिख नहीं रहे।

पर इतने लोग सड़क पे क्यों हैं? सबको घर में बैठना चाहिए। जैसे-जैसे सितारा नज़दीक आ रहा है, साँस भी भारी होती जा रही है। चलना मुश्किल हो गया है। अब तो टीवी वाले भी घर चले गए। सबने अपने-अपने आखरी समाचार पढ़ दिए। कुछ रोते हुए गए और कुछ पागलों की तरह हँसते हुए। लेकिन पिंटू को खुशी हुई जब उसके पसन्दीदा क्रिकेटर संजू रस्तोगी ने कहा, “आखिरी दिन है, मस्त रहो। अपनी पसन्द की कोई चीज़ खाओ।”

पिंटू शायद तीन साल का था जब उसने पहली बार मिठाई खाई थी। बनारस में वैसे तो हज़ारों मिठाई की दुकानें हैं और कहा जाता है यहाँ कुल मिलाकर बीस हज़ार अलग-अलग किस्मों की मिठाइयाँ बनती हैं। बहुत-सी मिठाइयाँ, जैसे कटहल के लड्डू या बाँस का मुरब्बा यहीं की ईजाद है और बस यहीं की गलियों में मिलता है। एक पाठक जी तो मिट्टी की बर्फी भी बनाते थे। गंगा तट की चिकनी मिट्टी, दूर गाँव से लाते थे जहाँ पानी साफ हो। उस मिट्टी को कई-कई दिन धो के, साफ कर के, फिर उसमें चन्दन और केवड़ा घिस के, खस-गुलाबजल डाल के, गुड़ के साथ पकाते हैं तो भूरे रंग की एक बर्फी बनती है जो गर्मियों में जिगर को ठण्डा रखती है। ऐसा तो गज्जब शहर है ये! मिथक तो कहते हैं दुनिया का पहला नगर है बनारस और आज यहीं पिंटू दुनिया की अन्तिम शाम देखनेवाला है।

कागज़ के एक छोटे-से फर्रे पे पिंटू ने लिखा, “मम्मी पापा! हम निकल रहे हैं करेजवा खाने। उदास मत होना। प्यारा पिंटू।” सड़क पर आते-आते पौने छह बज चुके हैं और पिंटू ने फैसला किया है कि पाण्डेपुर जाने की बजाय यहाँ नज़दीक में गिरजाघर चौराहे पर काशीवाले के यहाँ ही खा के काम चला लेगा। लेकिन इस तरफ भी भयंकर भीड़ है। कुछ लोग अभी भी तोड़-फोड़ में लगे हैं, कुछ लूट-खसोट में। काहे? पता नहीं। या तो गुस्सा निकाल रहे हैं या पिंटू की तरह अपनी आखिरी तमन्ना पूरी कर रहे हैं। या हो सकता है ये वो लोग हों जिन्हें यकीन है कि दुनिया खत्म नहीं होगी – मौके का फायदा उठा लो।

पिंटू अब तेज़ी से चल रहा है। भीड़ और धक्के के बीच, नाली के ऊपर-ऊपर, बीच सड़क से हट के, ताकि कहीं कुचला ना जाए। पिंटू बतला नहीं सकता कि उसके लिए गुलाबजामुन क्या है! बाहर से गहरा भूरा या काला और अन्दर से हलका भूरा या लाल, दूध और मावे और सूजी और चाशनी का सुगम-संगीत। सबसे आगे है मावे का स्वाद जिसमें संगत दे रहे हैं दूध और चाशनी। पास ही हलकी-सी बाँसुरी की तरह बज रही है घी में भुनी सूजी की महक। पिंटू ने पढ़ा था कि गुलाबजामुन एक अद्भुत मिठाई इसलिए भी है कि ये पूरब और पश्चिम के मिलन से बनी है। मंगोलों और मुगलों के आने से पहले, हमारे यहाँ मुख्यतः दूध की ही मिठाइयाँ बनती थीं। खीर, रसगुल्ला, दूध की बर्फी वगैरह। और मुगल आए तो अपने साथ आटे की मिठाइयों और हलवों का नुस्खा लाए। यानी सूजी का हलवा और बेसन या बूँदी का लड्डू और जलेबी, सब मध्य एशिया से यहाँ आया है। ईरान और इज़राइल में अब तक भी इन मिठाइयों का खूब

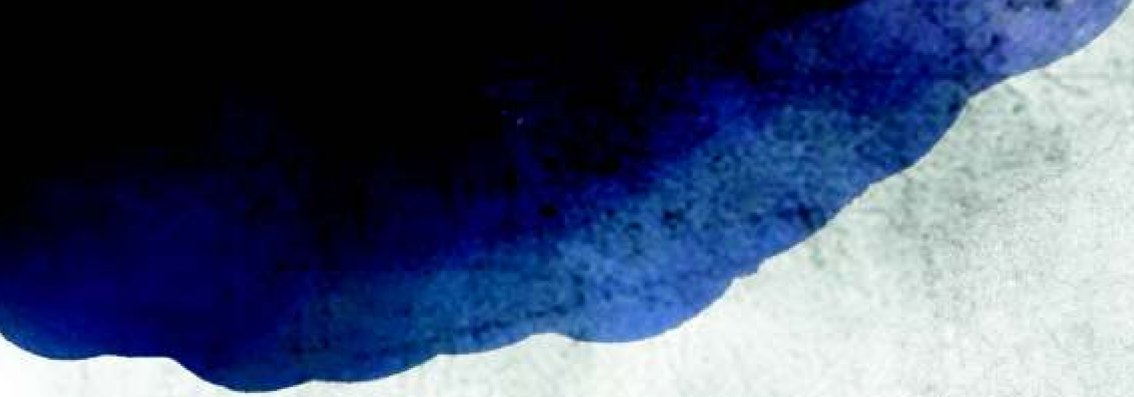

चलन है। और इन दोनों विधाओं, मुगलई और आर्य, दूध और सूजी, का सुन्दर मिश्रण है गुलाबजामुन। गंगा-जमुनी तहज़ीब का अज़ीम शहज़ादा – पिंटू का करेजवा!

वैसे इस तीन सेकंड की प्रक्रिया का सबसे मज़ेदार हिस्सा वो तीसरा सेकंड है। पहले सेकंड में सब कुछ बिखरेगा, दूसरे में घनघोर ऊर्जा निकलेगी, और तीसरे में, अगर बहुत से और पाँसे सही पड़े तो, हमारे बिखरे हुए प्रोटोन और इलेक्ट्रॉन जुड़कर एक अलग धातु बन जाएँगे। एक ऊबड़-खाबड़ पत्थर का टुकड़ा जिसका वज़न करीबन 5 लाख मेगाटन और सतह क्षेत्र उत्तर प्रदेश जितना होगा। वैज्ञानिकों ने इसे एक सुन्दर-सा नाम भी दिया है – एटर्निटी शिप – यानी शाश्वत जहाज़। हमारे अवशेषों से बना वो अजीब दैत्य जो सदा अन्तरिक्ष में तैरता रहेगा।

गिरजाघर के सामने आते ही पिंटू का दिल डूबने लगा है। गिरजे में इतनी भीड़ है कि आगे जाने का सवाल ही नहीं। आगे मोड़ से ही विश्वनाथ गली भी शुरू हो जाती है। लगता है वहाँ भी हज़ारों लोग अन्तिम दर्शन को आए हुए हैं। घड़ी के हिसाब से सिर्फ पाँच मिनट बचे हैं और पिंटू को याद आ रहा है वो लकड़ी के चमचे से गरम जामुन को काटना, उसके कटते ही अन्दर कैद धुएँ का किसी तिलिस्म की तरह निकलना और गुलगुले का मुँह में रखते ही खुद-ब-खुद पिघलना जैसे कि कह रहा हो, "काहे मेहनत करोगे जी महाराज? हम घुल रहे हैं ना खुद्दे से!"

अचानक एक रेला आया और किस्मत पिंटू की कि यह रेला जामुन की दिशा का ही है। एक-डेढ़ मिनट बचा होगा जब पिंटू दुकान के सामने है। चारों तरफ से भीड़ ने हर-हर-महादेव का नारा लगाना शुरू कर दिया है। लूट खसोट रुक गई है। धक्का-मुक्की बन्द हो गई है। बस सब तरफ वही नारा है – जैसे कि पूरा शहर एक साथ शिव जी को याद करेगा तो परलय टल जाएगा! भूल गए क्या सब – परलय तो शिवजी का मुख्य पोर्टफोलियो है?

पिंटू को लेकिन नारे से कोई मतलब नहीं। वो दनदनाता हुआ काशी चाट भण्डार के अन्दर घुसता है और गुलाबजामुन खोजना शुरू कर देता है। काउण्टर पे तो नहीं है। यहाँ नीचे बालटी में भी नहीं! अन्दर रसोई में? समय समाप्त होने का बिगुल बजनेवाला है बस। रसोई में भी नहीं दिख रहा! 20-19-18-17-16... हर-हर-महादेव, गिरजा के घण्टे, भीड़ अब एक सुर में रो रही है शायद, कहाँ है गुलाबजामुन यार?

पिंटू हताश बाहर की तरफ मुड़ा और तभी बिजली की-सी तेज़ी से दिमाग में कौंधता है वो छोटा हाण्डा जो गोलगप्पे वाले बक्से के नीचे रखा है। रात के बाद उसी हाण्डे में से तो मिलता था

चित्रः निशिथ मेहता

जामुन, जब बालटी में खतम हो जाता था। पिंटू ने ढक्कन हटाया – कुछ नहीं तो अन्दर 30-40 हैं। जामुन हाथ में है। ITR-688 अब इतना बड़ा हो गया है कि आँख को गुलाबजामुन से ज़्यादा नज़दीक लग रहा है। अब शायद अन्तरिम चार सेकंड हैं। इतने में करेजवा या तो मुँह में जाएगा या टूट जाएगा। पिंटू शर्त जीतेगा या सब कुछ हारेगा। गुलाबजामुन मुँह की तरफ बढ़ रहा है, पिंटू की आँखें प्रत्याशा में बन्द हो रही हैं। शरीर के अन्दर एक घमासान हलचल हो रही है, सब डूब रहा है। मुँह तक आते-आते करेजवा अपना नाम चरितार्थ कर गया है – बीच में से गप्प कर के टूट रहा है। करेजवा की तरह ही पिंटू भी टूट रहा है। मस्तिष्क के अन्तिम कोने में जल रही अन्तिम रोशनी ने पिंटू को सन्देश दे दिया है कि वो करेजवा नहीं खा पाएगा। लेकिन उसे खुशी है कि अगले ही सेकंड में उसमें और गुलाबजामुन में कोई फर्क नहीं रहेगा। दोनों बस प्रोटोन और इलेक्ट्रॉन होंगे, हवा में तैरते हुए, जो तीसरे ही सेकंड में जुड़ जाएँगे, शाश्वत जहाज़ की ईंट बनकर। पिंटू के चेहरे पर एक सुकून है – जैसे उसने अभी-अभी पाण्डेपुर का ताज़ा गरम करेजवा, इत्मीनान से खाया हो।

पेड़ों के गीत

सुशील शुक्ल

बहुत पुरानी बात है। तब पृथ्वी पर इंसान आए-आए ही थे। पेड़, पशु, पक्षी, कीड़े-मकोड़े उन्हें बड़े अचरज से देखते थे। पेड़ गाने में लगे रहते। इंसान उनके गीतों पर झूमते रहते। इसी तरह कुछ हज़ार साल बीत गए।

एक बार पेड़ों को लगा इंसान उनके गीत चुरा रहे हैं। वे चौकस हो गए। पूरा जंगल फिकर में था। पलाश बोला, "हमें अपने गीतों को कहीं छुपाकर रखना पड़ेगा। हमें जैसे ही पता चलेगा कि इंसान आ रहा है हम चुप हो जाएँगे।" "पर इन गीतों को छुपाएँगे कहाँ?" साँप बोला। बाँस ने कहा, "मैं इन्हें अपने दिल में छुपा लूँगा।" उस दिन से बाँस गीतों को रखने के लिए पोले होने लगे।

अब इंसान जैसे ही जंगल में आता जंगल के गीत थम जाते। सारे के सारे गीत बाँसों में जाकर छुप जाते। इंसान पेड़ों के गीतों को जगह-जगह ढूँढता। पर उसे गीत न मिलते। ऐसे ही कुछ साल और बीते।

एक दिन इंसान को पता चल गया कि पेड़ों के सारे गीत कहाँ छुपे हैं। उस दिन से इंसान बाँसों में छुपे गीत ढूँढ रहे हैं।

आज भी वे बाँसों के टुकड़ों से बाँसुरी बनाते हैं। और उनमें पेड़ों के छुपे गीत तलाशते हैं।

चित्रः सोनाली बिस्वास

तीन कथाएँ

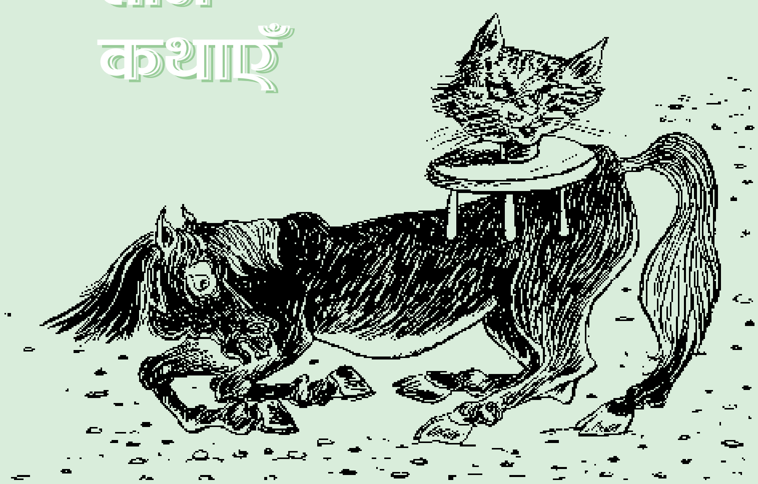

चित्रः प्रशान्त सोनी

1.
कहते हैं अमरीका के राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन ने एक बार अपने एक दोस्त से पूछा कि अगर पूँछ को हम टाँग कहें तो बताओ एक घोड़े की कितनी टाँगें होंगी!
"पाँच," दोस्त ने तपाक से जवाब दिया।
राष्ट्रपति हँस कर बोले, "नहीं। इसका जवाब चार है। पूँछ को टाँग कहने से वो क्या टाँग बन जाएगी।"

2.
सोज़न एक चीनी ज़ेन गुरु से उनके एक शिष्य ने पूछा, "दुनिया की सबसे कीमती चीज़ क्या है?"
गुरु ने कहा, "एक मरी हुई बिल्ली का सिर।"
"ऐसा क्यों?" शिष्य ने पूछा।
"क्योंकि कोई उसकी कीमत नहीं आँक सकता," सोज़न बोले।

3. चार भिक्षुओं ने तय किया कि वे दो हफ्ते बिना बोले ध्यान लगाए रहेंगे।
पहली ही रात जब वे बैठे थे तो मोमबत्ती की लौ कुछ देर काँपी और बुझ गई।
"ओह, नहीं। मोमबत्ती तो बुझ गई।" पहला भिक्षु बोला।
"हमें तो बात नहीं करनी थी ना!" दूसरा बोला।
"तुम दोनों को ये एकान्त तोड़ने की क्या पड़ी थी?" तीसरा बोला।
"वाह, देखा एक मैं ही था जो बोला नहीं।" चौथा बोला।

गर्म चाय की पहेली - उत्तर

मेरे गिलास में चाय ज़्यादा थी कि सौरभ के गिलास में शरबत,

इस बात को दो तरह से देखा जा सकता है। एक अंकों की गणना से और एक बहुत ही आसान तरीके से।

चाय और शरबत को मिलाने से पहले और बाद में हम दोनों के गिलास में बराबर-बराबर घोल थे – 90 मिलीलीटर। मेरे गिलास में जितनी भी चाय आई वो सौरभ के गिलास से ही आई होगी। और मेरे गिलास से जितना शरबत गया उतनी चाय आ गई। इस तरह हम दोनों के गिलास में बिलकुल बराबर चीज़ों का आदान-प्रदान हुआ। यानी मेरे गिलास में जितनी चाय है उतनी ही शरबत सौरभ के गिलास में है। और हम ये प्रक्रिया कितनी भी बार करें ऐसा ही रहेगा। बस मेरे गिलास में चाय बढ़ती जाएगी और सौरभ के गिलास में शरबत। परन्तु जितनी उसकी चाय उसके गिलास में आई उतना ही शरबत उसके गिलास में गया।

अब अंकों की गणना करते हैं।

मैंने सौरभ के गिलास में 10 मिलीलीटर शरबत डाल दिया। इससे उसका गिलास 100 मिलीलीटर का हो गया – जिसमें 90 मिलीलीटर चाय और 10 मिलीलीटर शरबत है।

मेरे गिलास में 80 मिलीलीटर शरबत बचा।

अब सौरभ ने अपने इस घोल का 10 मिलीलीटर मेरे गिलास में डाल दिया। 10 मिलीलीटर के इस घोल में 9 मिलीलीटर चाय है और 1 मिलीलीटर शरबत है। जब यह घोल मेरे गिलास में आया तो सौरभ के गिलास में 81 मिलीलीटर चाय और 9 मिलीलीटर शरबत बचा।

तो मेरे गिलास में अब 81 मिली शरबत और 9 मिलीलीटर चाय हो गई।

तो मेरे गिलास में जितनी चाय है सौरभ के गिलास में उतना ही शरबत।

बोली रंगोली

ग्यारह ऊँट थे

ग्यारह ऊँट थे और तीनों में बँटने थे
पहला शागिर्द जो उम्र में इन दोनों से बड़ा था, बोलाः
आधी उम्र हुज़ूर की मैंने खिदमत की है
आधे ऊँट तो मेरे होंगे!
दूसरा बोला, एक चौथाई तो मैंने भी काटी है।
तीसरा सब से बाद में आया था
वो बोला,   बीस बरस से तो मैं भी हूँ।
कम से कम एक छटा हिस्सा तो मेरा भी है!
लेकिन ग्यारह ऊँट थे तीनों में वो बँटते कैसे?
पीर साहब ने मरते-मरते
पहले शागिर्द से इतना कहा था
जितने ऊँट हैं मेरे सब आपस में ले लो
लड़ना मत, और देखो ना-इन्साफी न हो!
ग्यारह ऊँट थे तीनों में वो बँटते कैसे?
पीर साहब के एक बड़े भाई थे
उम्र में और दानाई मे वो सब से बड़े थे
लेकिन उठकर चलने से माज़ूर थे वो
तीनों उनके पास गए, तो लेटे-लेटे बोलेः
एक ऊँट बचा है मेरा, वो ले जाओ
काम निकल जाए तो वापस कर जाना!
बारह ऊँट हुए तो पहला,
आधे लेकर अलग हुआ!
दूसरे ने भी एक चौथाई, तीन निकाले, अलग हुआ
तीसरे ने भी, एक छटा हिस्सा पाया, दो ऊँट मिले
एक ऊँट फिर बचा रहा
जो लिया था, जाकर लौटा आए!

– गुलजार

एडलीन, छठी, सनसिटी, गुड़गाँव

इस बार हमें कुछ कम चित्र मिले। शायद तुम सब हॉफ ईयरली परीक्षाओं में मशगूल रहे होगे। खैर।

गुलज़ार साब के पसन्दीदा चार चित्रों के अलावा कुछ और चित्र हैं जो हमें पसन्द आए हैं। उनमें से तीन इस बार प्रकाशित कर रहे हैं। शेष कुछ तुम्हें आने वाले अंकों में देखने को मिलेंगे।

रित्विक गुप्ता, आठवीं, डीपीएस, लुधियाना

इस बार की कविता है -

खिड़की से झाँक के देखना कोई
इस घर में रहने आया है
सी-सी करता हाथ मलता है
मंकी कैप पहने आया है

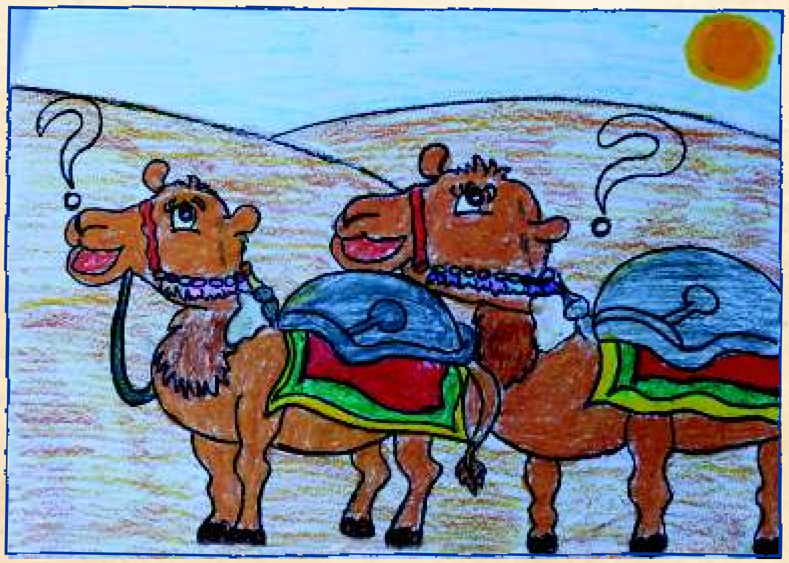

पी प्रसीबा, सातवीं, डीपीएस, कोयम्बटूर

हो सकता है बड़े तुम्हें इसके अर्थ बताएँ। उनके अर्थ सुनो-समझो पर चित्र अपने मन का ही बनाओ...। कोशिश करना कि तुम्हारे बनाए चित्र हमें **15 अक्टूबर** तक मिल जाएँ। चित्र के साथ अपना पता, कक्षा, फोन नम्बर ज़रूर लिखना।

बोलीरंगोली

गोपाल, 12 साल,
मरुदम फार्म स्कूल,
तिरुवन्नमलई, तमिलनाडु

राजसिंह , पाँचवीं,
विश्वास स्कूल,
गुड़गाँव

अदिति राज, चौथी, डीपीएस, पटना

मुकीलन कृष्णकुमार, आठवीं, डीपीएस, कोयम्बटूर

चकमक, एकलव्य,
ई-10, शंकर नगर,
शिवाजी नगर,
भोपाल -462 016
(फोन - 09425010115)
चाहो तो ईमेल कर दो
chakmak@eklavya.in

राजवती सिंह,
दस वर्ष,
अरण्यावास, भोपाल

पानी पानी है

पिछले अंक में प्रकाशित गतिविधि तुम्हें बारिश के पानी और नदी, कुएँ और तालाब आदि के पानियों में फर्क पता करना था। इस पर तुम्हारे कुछ जवाब...

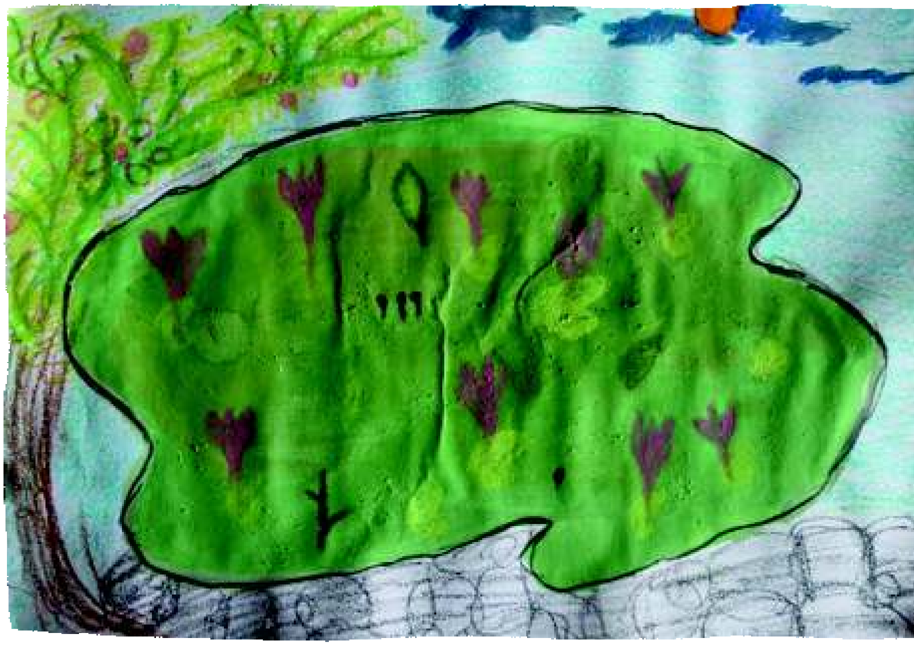

तालाब का पानी हरा होता है। यह कमल खिलाता है। लिली उगाता है। मेंढकों-केकड़ों को ज़िन्दा रखता है।

- अश्वति, 11 साल

बारिश के पानी और समुद्र के पानी में यही अन्तर है कि समुद्र के पानी में ढेर सारा नमक होता है। यह पानी भारी भी होता है और गन्दा भी। शहरों में पानी में तमाम कचरा पड़ता है। बारिश का पानी कीचड़ में मिल जाता है और समुद्र का पानी बालू में। अगर आप बारिश के पानी में तैरेंगे तो आप ताज़गी महसूस करेंगे। इसमें तैरना आसान भी होता है और इसे पिया भी जा सकता है।

अगर आप समुद्र के पानी में तैरेंगे तो आप गन्दे हो जाएँगे। पूरे शरीर पर बालू लग जाएगी। आपको ताज़गी नहीं महसूस होगी। समुद्र के पानी में तैरना मुश्किल है। इसे पिया भी नहीं जा सकता। बहुत गहराई में जहाँ समुद्री कछुए रहते हैं वहाँ समुद्र का पानी गहरे रंग का और बहुत ठण्डा होता है।

- निर्मल 9 वर्ष

गहरा

कुँआ है गहरा
उस पर बहरा
जो बोलो वो
देता दुहरा
- रमेशदत्त दुबे

ओ झरने
ऐसा करो
पर्वत पर चढ़ो
फिर नीचे उतरो
और क्या बताऊँ
तुम्हें करने
ओ झरने
- प्रभात

झील के भीतर गहराई में पानी ठण्डा था। लेकिन सतह पर यह गर्म था। इस पानी में अनेक कीट-पतंगे थे। वहाँ घनी घास भी थी। तलहटी में अनेक मछलियाँ तैरती नज़र आ रही थीं। पानी का रंग काला ज़रूर लग रहा था। लेकिन जाने क्यों मुझे लगता है वह साफ पानी था। जब बारिश हुई तो घास बढ़ी और कीट-पतंगे पैदा हुए। जब बारिश हुई तो घास बढ़ी और कीट-पतंगे भी बढ़ गए। पानी इकट्ठा हुआ तो ढेर सारी मछलियाँ वहाँ हो गई। मैंने एक किंगफिशर को देखा जिसने मछली पकड़ने के लिए पानी में गोता लगाया।

- हरिहरन, 12 वर्ष

रंग से पानी हरा होता है। फसल उगाने, पीने और तैरने के काम आता है।

- तमिलसेल्वन, 9 साल

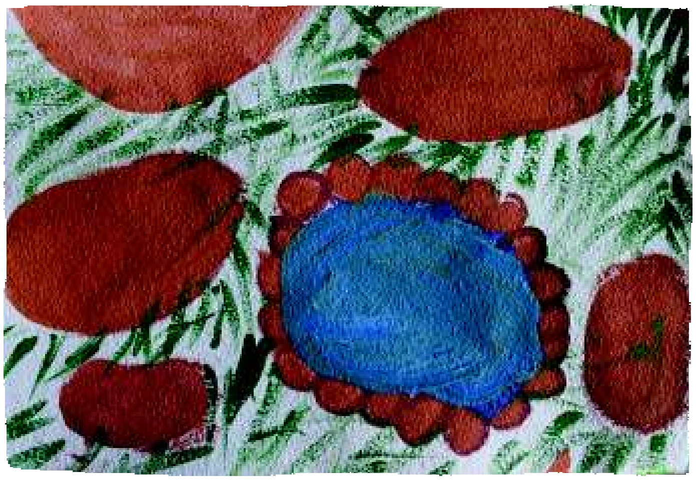

आप सभी मरुदम स्कूल तमिलनाडु में पढ़ते हैं।

बारिश का पानी पहाड़ों से ढलककर नदियों, तालों, झीलों, कुँओं और सागरों में जाता है। इससे पेड़ उगते हैं, जीव इसे पीते हैं मछलियाँ इससे ज़िन्दा रहती हैं। समुद्री पानी नमकीन होता है। इसी से तो हम नमक बनाते हैं। कुँओं का पानी पीने, तैरने और फसलें उगाने के काम आता है।

- विक्रम, 11 वर्ष

चित्रकल्पना : शशिकिरण

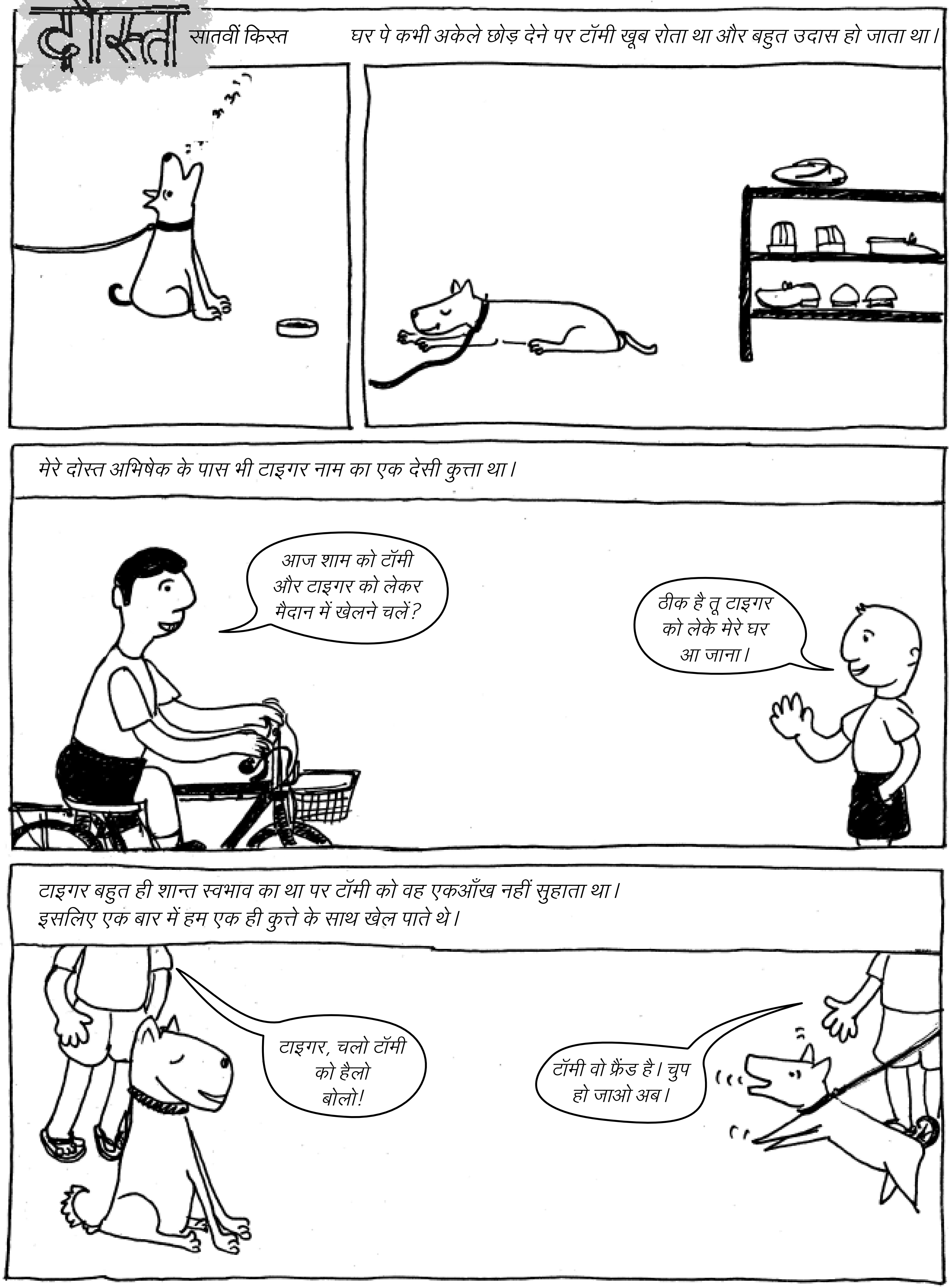

अब टॉमी लगभग नौ महीने का हो चला था।
एक दिन अचानक देखा कि वो ठीक से खड़ा नहीं हो पा रहा था।
अम्मा टॉमी को कुछ हो गया है। वो चल नहीं पा रहा है।
अम्मा ने टॉमी की हालत देखी और अन्दाज़ लगाया कि शायद वो घायल है।
मुझे लगता है इसे चोट लग गई है। मैं पता करती हूँ कि वो टाइगर को किस डॉक्टर को दिखाते हैं। मैं सब कर लूँगी। तुम लोग स्कूल जाओ।
ऐसे तीन-चार दिन गुज़र गए। टॉमी की तबियत में कोई सुधार नहीं हुआ। हमारे यहाँ के जानवरों के डॉक्टर गाय-बैलों को ज़्यादा अहमियत देते थे। टॉमी के इलाज में डॉक्टर को कोई जल्दी नहीं थी। खैर, पिताजी डॉक्टर को किसी तरह घर ले ही आए।
इसे हर दिन एक इंजेक्शन देना होगा। धीरे-धीरे ये ठीक हो जाएगा। क्या इसे किसी ने पीठ पे ज़ोर से मारा है?

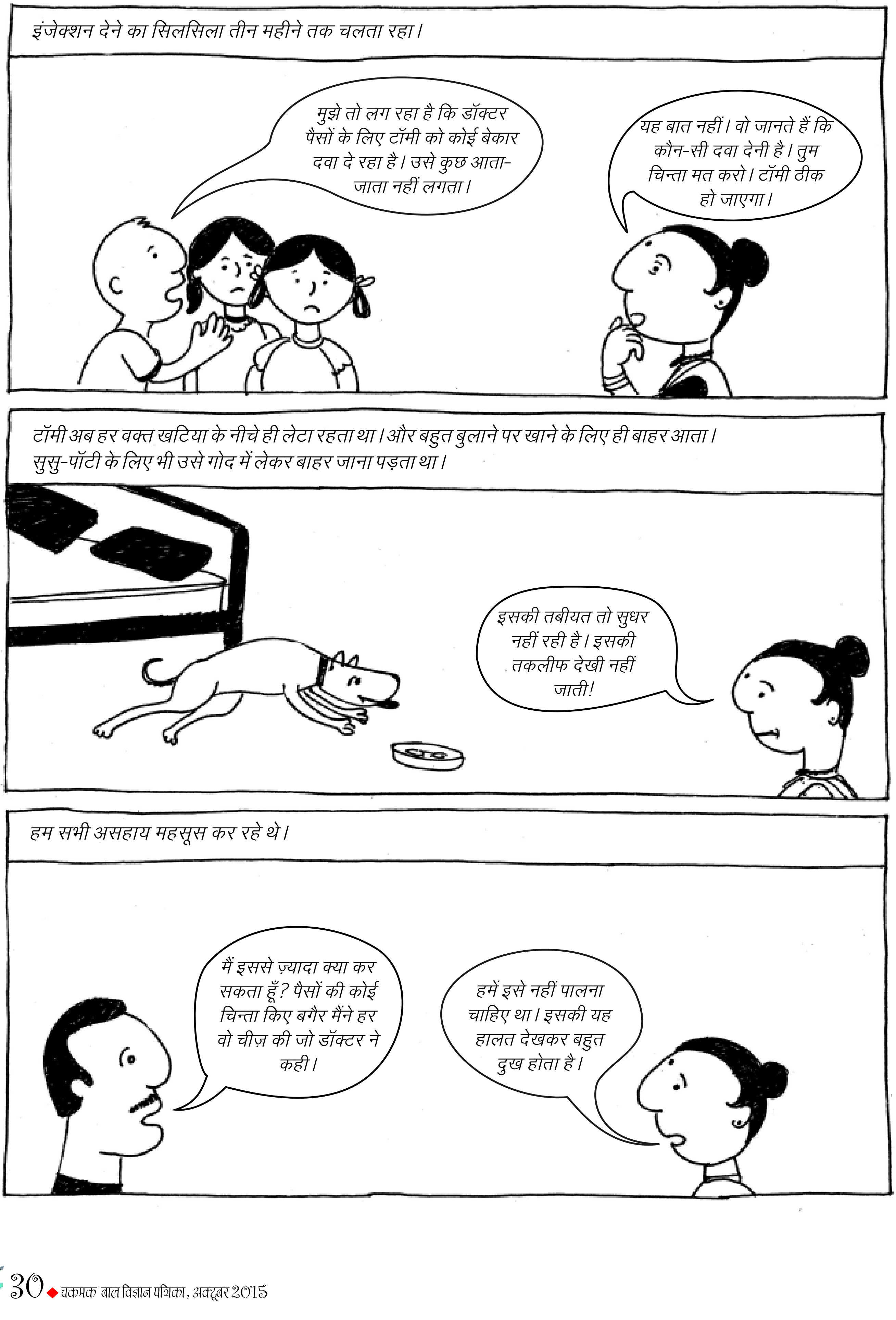
इंजेक्शन देने का सिलसिला तीन महीने तक चलता रहा।
मुझे तो लग रहा है कि डॉक्टर पैसों के लिए टॉमी को कोई बेकार दवा दे रहा है। उसे कुछ आता-जाता नहीं लगता।
यह बात नहीं। वो जानते हैं कि कौन-सी दवा देनी है। तुम चिन्ता मत करो। टॉमी ठीक हो जाएगा।
टॉमी अब हर वक्त खटिया के नीचे ही लेटा रहता था। और बहुत बुलाने पर खाने के लिए ही बाहर आता। सुसु-पॉटी के लिए भी उसे गोद में लेकर बाहर जाना पड़ता था।
इसकी तबीयत तो सुधर नहीं रही है। इसकी तकलीफ देखी नहीं जाती!
हम सभी असहाय महसूस कर रहे थे।
मैं इससे ज़्यादा क्या कर सकता हूँ? पैसों की कोई चिन्ता किए बगैर मैंने हर वो चीज़ की जो डॉक्टर ने कही।
हमें इसे नहीं पालना चाहिए था। इसकी यह हालत देखकर बहुत दुख होता है।

एक दिन जब हम स्कूल से घर पहुँचे तो टॉमी घर पर नहीं दिखा।
देखो, टॉमी दोपहर को मर गया। पिताजी उसे ले गए हैं। पहाड़ के पास दफनाने।
उस दिन खाने पे सबको डॉट पड़ी।
तुम्हारे न खाने से वो वापस नहीं आ जाएगा।
हमारा यह व्यवहार दो-तीन दिन चलता रहा। अम्मा बहुत परेशान हो गईं।
तुम तीनों कान खोलकर सुन लो! अब कभी इस घर में कोई पालतू जानवर नहीं आएगा। टॉमी की तकलीफ सब ने देख ही ली है न! अब ये फिर से नहीं होगा बस। अब खाना खाओ...

जारी...

मेरा पन्ना

तबादला

मैं सिर्फ पाँच साल का था और हम कश्मीर में रहते थे। वहाँ मेरे ढेर सारे दोस्त थे और हम खूब मज़े करते थे। लेकिन एक दिन पापा ने बताया कि उनका तबादला पटना हो गया है। यह सुनकर मैं खुश नहीं हुआ क्योंकि मैं इस जगह को छोड़कर जाना नहीं चाहता था। लेकिन अगले दिन हमें जाना पड़ा।

पटना में मेरा नाम डीपीएस में लिखवाया गया। यहाँ भी मैंने ढेर सारे दोस्त बना लिए और खूब खुश रहने लगा।

एक बार हमारे स्कूल में एक कार्यक्रम हुआ जिसमें हमें पार्क, म्यूज़ियम जैसी जगहें दिखाने ले गए थे।

मेरा एक दोस्त प्रद्युम्न भी मेरे साथ था। वो हर काम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता था। लेकिन उस दिन वह सुस्त दिख रहा था। जब मैंने उससे इसकी वजह पूछी तो उसने कहा कि उसके पापा का तबादला कश्मीर हो गया है।

— सुप्रम कुमार, छठी, डीपीएस, पटना

—इश्रा, छठी, भूटा स्कूल, मुम्बई

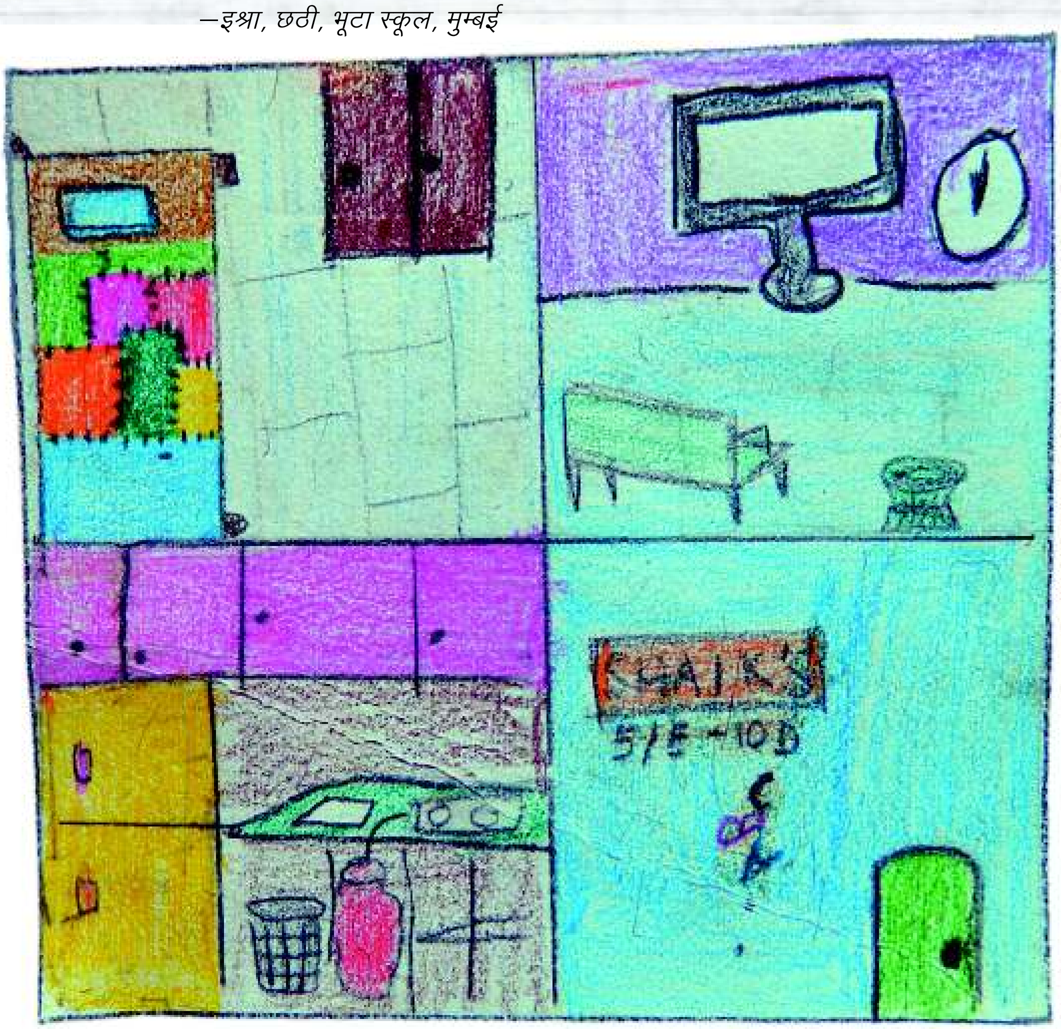

चूहा भागा

चूहा भागा, चूहा भागा
देखो मेरा लिए जा रहा धागा
देखो, देखो भाग रहा है
जाकर उसे पकड़कर लाओ
जैसे ही वह पकड़ा जाए
उससे मेरा धागा छीना जाए
अगर वह खाए तो मार दिया जाए
मेरा धागा उसने खोया है
मेज़ के नीचे अब सोया है
जाकर उसे पकड़कर लाओ
अब वह चूहा भाग ना पाए

—योगेश बधाणी, पाँचवीं,
गणेशपुर, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

मेरे प्यारे पापा

मेरे पापा एक अच्छे इनसान थे और मुझे वो बहुत प्यार करते थे। वह एक दिन भी मुझे छोड़ कर कहीं नहीं जाते थे। वो मेरी मम्मी से भी बहुत प्यार करते थे। एक दिन जब मेरे भाई का जन्मदिन था तो वो उसके लिए बहुत सुन्दर एक कार लाए थे। वो उस कार के साथ रोज़ खेलता था लेकिन एक दिन वो कार टूट गई और फिर मेरा भाई बहुत रोया। उसके दूसरे दिन मेरे पापा का डेथ हो गया और मेरी माँ विधवा हो गई।

– चित्रलेखा करुवा, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय मकडिया हटिंग, नोवामुण्डी, झारखण्ड

– साहिल, वाराणासी, उ. प्र.

उलझन

मेरे घर के पास थे दो पेड़
एक पीपल दूजा बरगद
लोगों ने बरगद कटवा दिया
बना दिया एक ऊँचा मकान
अब जब पीपल बड़ा होता
बार-बार उसे कटवा दिया जाता
बात ये मेरी समझ ना आती
क्यों कटता है वो बार-बार

– गौरव राज,
सी सी डी एस स्कूल, पटना, बिहार

– मोहम्मद ज़ाकी खौरा, सातवीं,
केन्द्रीय विद्यालय 1 भुज, गुजरात

मेरा पन्ना

पापा की एक शरारत

यह बात जब की है तब पापा बोर्डिंग स्कूल में पढ़ते थे। वे दस साल के थे। वहाँ पर उन सबको ब्रश करने के लिए टूथपाउडर दिया जाता था। पापा को वो अच्छा नहीं लगता था। तो पापा खुद का टूथपेस्ट ले आए थे। और रोज़ ब्रश करने के बाद पी.टी करने चले जाते थे। इसी समय रोज कोई पापा का टूथपेस्ट इस्तेमाल कर लिया करता था। जब पापा को यह पता चला तो उन्हें समझ आ गया कि उनका पेस्ट कैसे इतनी जल्दी खत्म हो जाया करता था। पापा को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने एक दिन टूथपेस्ट खाली करके उसमें शेविंग क्रीम भर दी। और उसका नतीज़ा यह हुआ कि उस व्यक्ति ने शेविंग क्रीम से ब्रश कर लिया। जब उस क्रीम ने बहुत सारा झाग बनाना शुरू किया और उसके मुँह में कुछ अजीब-सा महसूस हुआ। तब उसने वो क्रीम थूकी। पापा उसे इस हालत में देख हँसने लगे। पर तब से पापा ने इस तरह की शरारत करना बन्द कर दी। तब से वह जब भी यह बात याद करते हैं तो उन्हें बहुत शर्मिन्दगी महसूस होती है। वाकई पापा कितने शरारती थे और आज हमें शरारत करने से मना करते हैं।

—काजल चौहान आठवीं, सेंट मेरी कॉन्वेन्ट स्कूल, देवास, म.प्र.

जीवन क्या है

यह एक सुहाना सफर है
जहाँ सबके पास उड़ने के लिए पर हैं
उड़ते पंछी की प्यास है ये
पुराने लम्हों की मिठास है ये
है यह बहती नदी की तरह
जो आती-जाती पुनः पुनः
चलती जाती है निरन्तर
मिल जाती सागर में बहकर
यह हम सबकी सोच है
जिसकी सीमा नहीं है
यह ऊँचे पर्वत की चोटी है
गहरे पानी का मोती है

—कृति पटेल, नवीं,
अदानी देव पब्लिक स्कूल,
मुण्ड्रा, कच्छ, गुजरात

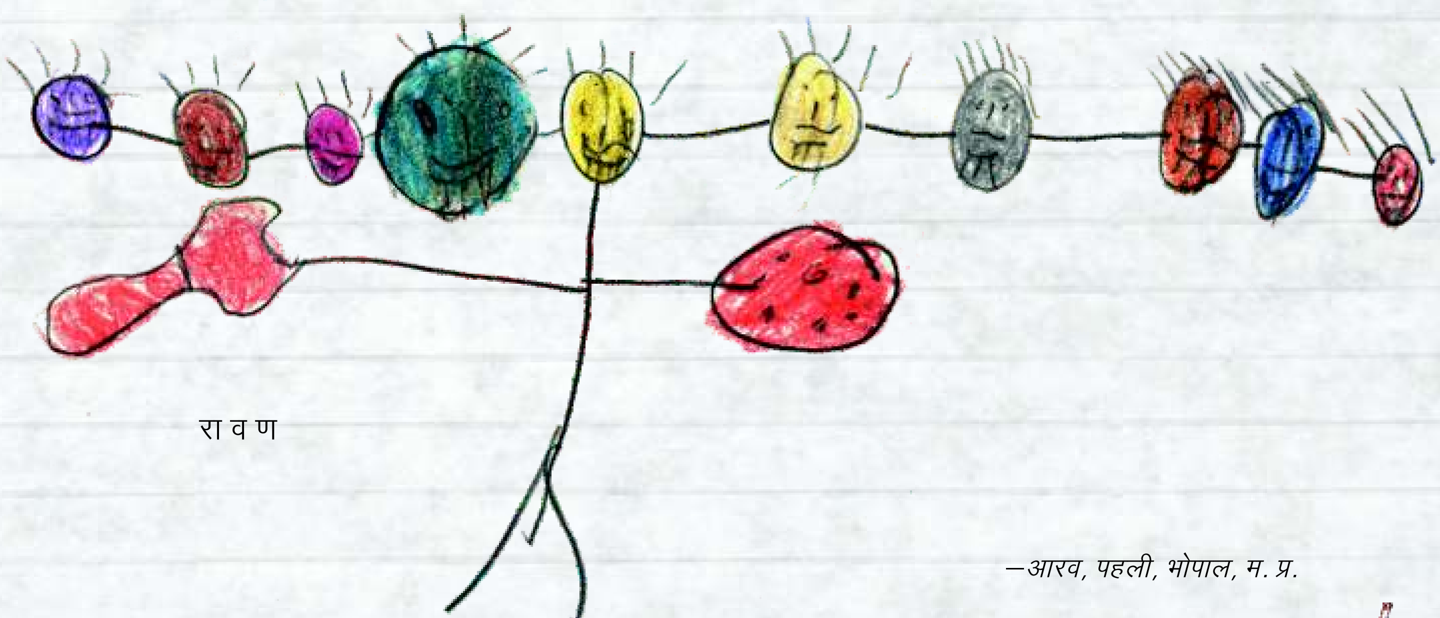

—आरव, पहली, भोपाल, म. प्र.

भैंस

भैंस का रंग है काला-काला
चेहरा इसका बड़ा दुलारा
पानी इसको बहुत सुहावे
कीचड़ मिट्टी औरो भावे
घास-भूसा इसका भोजन
पूछो मत यारो इसका वज़न
रहना चाहे खुल्लम खुल्ला
भाता इसे ना हल्ला-गुल्ला
देती है यह मीठा दूध
माँगे कभी ना दूध का सूद

प्रस्तुति : अनिकेत यादव, पाँचवीं, धर्मपुर, उ. प्र.

—देवीलाल, विद्याभवन सोसायटी, उदयपुर, राजस्थान

नारियल

कौन नारियल के पेड़ों पर
जादू-सा कर जाता है
बन्द कटोरी में मीठा जल
चुपके-से भर जाता है

प्रस्तुति : सलेहा, दूसरी, अपना स्कूल पनकी पड़ाव, कानपुर, उ. प्र.

मेरा पन्ना

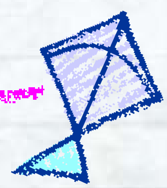

डॉलफिन और उसका बच्चा

एक डॉलफिन थी। वो न ऐसे स्विमिंग करते-करते गई। उसने शीशे में देखा कि उसके चेहरे पर बहुत सारी फिंसी हो गई थी। उसने सोचा कि मैं डॉक्टर के पास जाऊँगी और जाकर उसका पस निकलवाऊँगी। उसने (डॉक्टर) ना – जब उसका ठीक हो गया – एक टॉफी उसे दे दी क्योंकि वो रोई नहीं। उसने टॉफी घर जाके अपने बच्चे को दे दी क्योंकि बड़े तो खाते नहीं टॉफी।

बच्चे ने बोला, "थैंक यू, मुझे टॉफी दी, मुझे बहुत अच्छी लगी, मुझे और चाहिए। मुझे टेस्टी लगी।" डॉलफिन बोली, "यह डॉक्टर ने दी मुझे क्योंकि यहाँ पे फिंसी हो गई थी न। इसलिए मैं डॉक्टर के पास गई। मैंने ठीक करवाया, मैं रोई नहीं तो मुझे टॉफी मिली। तो मैंने सोचा मैं तो खाती नहीं टॉफी तो मैंने दे दी तुम्हें।"

"नहीं मुझे और चाहिए।" बच्चा बोला। तो उसने (डॉलफिन ने) बोला, "मैं बाज़ार से ले आऊँगी।" तो उसने (बच्चे ने) बोला, "ठीक है, मैं अभी स्विमिंग की प्रैक्टिस करता हूँ।" तो उसने की प्रैक्टिस खाते-खाते।

खाते-खाते उसे एक क्रोकोडाइल मिला। क्रोकोडाइल ने उसे (बच्चे को) खा लिया।

द्रिघान्चु

सुकुमार राय

अनुवादः रुद्राशिष चक्रवर्ती

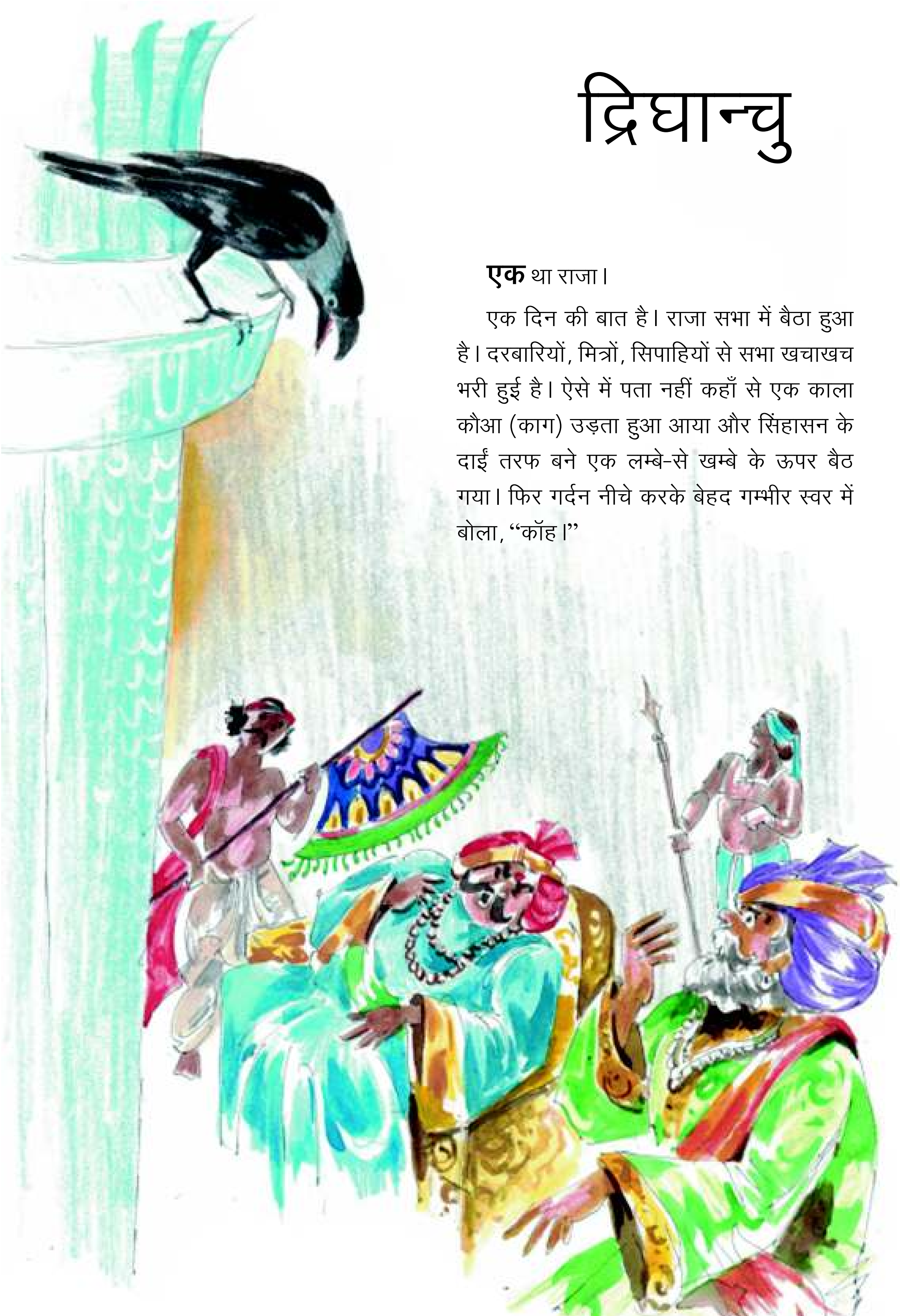

एक था राजा।

एक दिन की बात है। राजा सभा में बैठा हुआ है। दरबारियों, मित्रों, सिपाहियों से सभा खचाखच भरी हुई है। ऐसे में पता नहीं कहाँ से एक काला कौआ (काग) उड़ता हुआ आया और सिंहासन के दाईं तरफ बने एक लम्बे-से खम्बे के ऊपर बैठ गया। फिर गर्दन नीचे करके बेहद गम्भीर स्वर में बोला, “कॉह।”

चित्र : जगदीश जोशी

इतनी गम्भीर आवाज़ कि सभा में विराजे सभी की आँखें फटी रह गईं। लोग मुँह बाए रह गए। मंत्री जी कागज़ का एक पुर्जा लिए कुछ कहनेवाले ही थे कि भौंचक रह गए। दरवाज़े के सामने बैठा एक लड़का भैं...भैं कर रो पड़ा। राजा को पंखा झलनेवाले के हाथ से पंखा छूटा और राजा के सिर पर झप्प से जा लगा। राजा की झपकी टूट गई और वह चिल्ला पड़ा, “जल्लाद को बुलाओ।” तुरन्त जल्लाद हाज़िर हो गया।

राजा बोला, “सिर काट डालो।”

"हाय राम! किसका सिर काटना है महाराज?" सब लोग घबराहट में अपने-अपने सिर पर हाथ फेरने लगे। राजा फिर से झपकियाते हुए बोला, "सिर कहाँ गया?" जल्लाद बेचारा हाथ जोड़कर बोला, "किसका सिर महाराज?" राजा बोला, "मूर्ख, किसका सिर पूछ रहा है! जिसने वो खतरनाक आवाज़ निकाली थी उसका सिर।" यह सुनते ही सभा में बैठे हर किसी के मुँह से राहत की आह निकली। पर इतना सुनते ही वह कौआ वहाँ से उड़ गया।

तब मंत्री ने राजा को बताया, "उस कौए ने ही वह आवाज़ निकाली थी महाराज!" राजा बोला, "राज्य में जितने भी पण्डित हैं सबको बुलाओ।" हुकुम के पाँच मिनट के भीतर ही राज्य के सारे पण्डित हाज़िर हो गए। राजा ने पण्डितों से पूछा, "ये जो कौआ मेरी सभा में शोर मचा के गया है क्या आप लोग उसका कारण बता सकते हो?"

"कौए ने आवाज़ निकाली इसका कारण – इसका क्या मतलब है महाराज?" पण्डित एक-दूसरे के चेहरों को ताकते रह गए। एक नौजवान पण्डित घबराहट में बोला, "हुज़ूर शायद उसे भूख लगी होगी।"

राजा ने कहा, "क्या अकल है तुम्हारी! भूख लगी थी तो सभा में आया ही क्यों था? यहाँ क्या मिठाई मिल रही थी! मंत्री जी इसे निकाल बाहर करो।" औरों ने भी हाँ में हाँ मिलाई।

एक दूसरे पण्डित ने कहा, "महाराज हर कार्य के पीछे कोई न कोई कारण होता है। जैसे बारिश हो रही है तो मतलब यह कि बादल छाए हैं। रोशनी दिखती है यानी कहीं दीया जल रहा है। इसलिए कागा के कण्ठ से निकली सुमधुर ध्वनि का कोई न कोई अर्थ तो होगा ही। इसमें आश्चर्य की क्या बात।"

राजा ने कहा, "आश्चर्य इस बात का है कि तुम जैसे मोटी अकलवाले ऊलजुलूल करके भी मोटी-मोटी तनख्वाह पा रहे हो।" मंत्री जी आज से इनकी तनख्वाह बन्द कर दी जाए। तुरन्त ही सबने हाँ में हाँ मिलाई। "हाँ हाँ तनख्वाह बन्द कर दो।"

कागज़ में लिखा था –

पीला हरा ओरांगउटान
ईंट अलंगा गिरे धड़ाम
मुश्किल आसान उड़िया माली
धर्मतल्ला जगह खाली

दोनों पण्डितों की ऐसी दुर्दशा देख सभा में मौजूद सभी के मन में डर बैठ गया था। बहुत देर तक किसी की ज़ुबान से चूँ तक नहीं निकला। राजा गुस्से से पागल हो उठा। उसने फिर हुकुम दिया, "इस घटना का जवाब न मिलने तक कोई भी इस सभा से बाहर नहीं जाएगा।" राजा का हुकुम था। सब सहमे बैठ गए। सोचते-सोचते पसीने-पसीने हो गए। खुजला-खुलजाकर सिर की चमड़ी उधेड़ दी। बैठे-बैठे सब को भूख भी लगने लगी थी। पर राजा को न भूख थी, न चैन था। वे बैठे-बैठे झपकियाँ ले रहे थे। जब सबने अपने को उस हाल पर छोड़ दिया था। सब लोग पण्डितों को मक्कार, निकम्मे कामचोर कहकर मन ही मन गालियाँ बक रहे थे। ऐसे में अचानक एक कंकालनुमा आदमी सभा में आया। चीखा और गिर पड़ा। राजा-मंत्री-मित्र सब हड़बड़ाकर बोले, "क्या हुआ?"

उस आदमी पर सब पानी छिड़कने लगे। काफी देर बाद वह आदमी ठिठुरते हुए उठा और बोला, "महाराज, क्या वो दाढ़ काग था?" सभी बोले, "हाँ, हाँ। पर क्यों?" उस आदमी ने फिर से कहा, "महाराज क्या वो ऊपर दक्षिण की तरफ मुँह करके बैठा था, गर्दन झुकाए? और क्या गुस्से से उसकी भौंहें सिकुड़ी हुई थीं? क्या उसने कॉह की आवाज़ निकाली?" यह सुनकर हड़बड़ाहट-सी मच गई। सब एक-साथ कह उठे, "हाँ हाँ, ठीक यही हुआ था।" यह सुनकर वह आदमी फिर से रोने लगा। और कहने लगा, "हाय, हाय, उस वक्त मुझे क्यों नहीं खबर की गई?"

राजा ने कहा, "सच, तुममें से किसी ने इसे खबर क्यों नहीं की?" उसको कोई नहीं जानता था पर किसी में राजा के सामने यह कहने की हिम्मत नहीं थी। सब ने कहा, "हाँ, उसे तो खबर देनी ही चाहिए थी।" जबकि क्यों उसे खबर दी जाती और क्या दी जाती यह सबकी समझ से बाहर था। तब वह आदमी फिर से रोने लगा और मुँह टेढ़ा करते हुए बोला, "द्रिघान्चु।" ये भला क्या था! सबको लगा उस आदमी का सिर घूम गया है।

(शेष भाग पेज 46 पर)

पंजाबी बाल उपन्यास

(ञौवीं किस्त)

एक मगरमच्छ की जान को खतरा

जसबीर भुल्लर

पानी आज शाम से ही बरस रहा था।

इतनी वर्षा से तलैया को भर जाना चाहिए था, पर तलैया भरी हुई न थी। किरली ने पानी में कुछ दूर तक जाने का मन बनाया, पर आगे लोहे की जाली थी। पानी धीरे-धीरे जाली से बाहर जा रहा था।

वह वापिस लौट आई।

वह जान गई थी कि चाहे कितनी भी बारिश हो तलैया में इससे ज़्यादा पानी नहीं रुक सकेगा। उसने पानी में एक फेरा लगाया और फिर दूसरा। पानी में कोई घोंघा नहीं था और न कोई मेंढक या मछली। न ही वहाँ कोई कछुआ था, न मच्छरों के लार्वा। वहाँ तो किरली के खाने को कुछ भी न था।

उसने पानी से धीरे-से सिर बाहर निकाला। चारों ओर सुनसान था। वहाँ कोई ऐसा नहीं था जिससे वह भाग रही थी। किरली को नए घर में छोड़कर वे लोग जा चुके थे। उसने चारों ओर नज़र दौड़ाई। दूर तक पक्की दीवार दिखाई दी जिसके ऊपर लोहे का जंगला था। जंगले के अन्दर कुछ पेड़ थे और यहाँ-वहाँ कुछ झाड़ियाँ थीं।

उसने पानी से बाहर आकर फिर से चारों ओर देखा। अपने नए घर की बनावट देख उसे बहुत निराशा हुई। शिकार लोहे के उस जंगले को पार कर पानी पीने उस तलैया तक पहुँच ही नहीं सकता था। जंगले के भीतर इतनी कम जगह थी कि वहाँ शिकार होने की कोई सम्भावना न थी। वह पेट कैसे भरेगी? किरली मगरमच्छ को चिन्ता हुई। इसी फिक्र में पड़ी वह कीचड़ में सिर गिराकर लेट गई।

रात भर वर्षा होती रही। किरली भीगती रही। सुबह तक उसकी भूख तेज़ हो गई थी। वह क्या करे? वो सोच रही थी कि उन लम्बूतरे जीवों को वो जब चाहे मार सकती थी और अपना पेट भर सकती थी। उन्होंने तो किरली का जीना ही दूभर कर दिया था। लम्बूतरे जीव उसके वश में नहीं आनेवाले थे।

वह सोच में गुम थी कि अचानक दरवाज़ा खुला। इससे पहले कि किरली सँभल कर हमला करने को तैयार होती किसी ने कटा हुआ मास अन्दर फेंका और दरवाज़ा बन्द हो गया।

किरली ने जल्दी से माँस खाया। पेट भरने से उसकी बेचैनी कुछ कम हुई थी। उसने सन्तुष्टि में आँखें मूँद लीं।

अचानक दरवाज़ा फिर खुला। चार लोग तेज़ी-से भीतर आए। उनके हाथों में रस्से थे। किरली ने हमला करने के लिए अभी पैंतरा भी नहीं लिया था कि उन्होंने उसे रस्सों में जकड़ लिया।

ये लम्बूतरे जीव कौन थे? कल उसने आदमी नाम का यह जीव पहली बार देखा था। वे किरली से चाहते क्या थे? किरली को कुछ पता न था। जंगल में तो ताकतवर जीव कमज़ोर जीवों को भोजन बना लेते थे। इन्होंने तो किरली को पकड़कर खाने की बजाय उसे भोजन खिलाया था। यह बड़ी अजीब बात थी।

आदमियों ने किरली को एक बार रस्सों से बाँधकर छोड़ दिया था और अब फिर बाँध लिया था। किरली कुछ समझ नहीं पाई थी।

क्या ये जीव पागल थे?

कुछ समय पहले चिड़ियाघर में एक मगरमच्छ होता था। वह अपनी किस्म का एक ही मगरमच्छ था। हर नस्ल को अलग-अलग रखने का नियम था। अकेला रहने की वजह से वह हमेशा उदास रहता था। इससे उसका स्वास्थ्य दिन-ब-दिन बिगड़ रहा था। यह उदासी एक दिन उसकी मौत का कारण भी हो सकती थी।

वन्य जीवों का अभ्यारण्य बन जाने से, चेतन खन्ना को कुछ आशा बँधी थी। खुले माहौल में रहने से शायद वह मगरमच्छ बच जाए। चिड़ियाघर से कुछ जीवों को अभ्यारण्य में भेजते समय चेतन खन्ना ने सबसे पहले उस मगरमच्छ को ही वहाँ भेजा था। नदी मिल जाने पर भी उसके स्वास्थ्य में कोई खास सुधार नहीं हुआ था। अब हृदयपाल भगवान बन कर आया था। वह मगरमच्छ की नस्ल की एक मादा मगरमच्छ पकड़कर लाया था। इस मादा के साथ से उस मगरमच्छ का स्वास्थ्य निश्चित ही सुधर सकता था। इसी लिए चेतन खन्ना ने किरली के आते ही उसे अभ्यारण्य भिजवा दिया था।

अभ्यारण्य तक की यात्रा लम्बी थी। किरलीवाले ट्रक के जाने के लगभग दो घण्टे बाद चेतन खन्ना और हृदयपाल भी चल पड़े। लगातार हो रही बारिश ने रास्ता खराब कर दिया था। सँभल-सँभलकर पहुँचने में उन्हें रात हो गई।

किरली वहाँ पहले ही पहुँच चुकी थी। उसे नदी पर ले जाकर छोड़ दिया गया था। जब चेतन खन्ना को पता चला तो वह सिर पकड़कर बैठ गया। किए-कराए पर पानी फिर गया था।

भले ही किरली स्वस्थ थी पर अभ्यारण्य में आते ही किरली की स्वास्थ्य जाँच करनी ज़रूरी थी। उसके स्वस्थ होने बाबत पूरी तरह आश्वस्त होना ज़रूरी था। वैसे तो उसे कोई छूत का रोग नहीं था, पर गलती तो गलती ही थी।

इतनी-सी चूक को तो सहन किया जा सकता था, पर उन्होंने तो किरली को नदी में पुराने मगरमच्छ के पास छोड़ दिया था। ऐसा करने से दोनों में से एक की जान को खतरा भी था। ऐसे मौके पर दोनों मगरमच्छ उस स्थान पर अपना दावा ज़ाहिर करते थे। उस जगह का असली हकदार वही होता था जो ज़्यादा ताकतवर हो। एक दूसरे को भगाने की कोशिश में वे लड़ते-लड़ते लहुलुहान हो जाते थे। कई बार तगड़ा मगरमच्छ कमज़ोर को मार भी डालता था।

बाहर बिजली कड़की और बादल ज़ोर-से गरजे। बादलों की गड़गड़ाहट के साथ ही मूसलाधार बारिश होने लगी।

आज बारिश थोड़ी देर रुक-रुककर लगभग लगातार बरस रही थी।

उसने खिड़की का पर्दा हटाकर बाहर झाँका। खिड़की के रास्ते बाहर पड़ रहे प्रकाश के टुकड़े पर बूँदें गिर रही थीं। इसके आगे दूर तक अँधेरा ही अँधेरा था।

वह पर्दा छोड़कर पलटा, "मुझे अभी जाना पड़ेगा।"

"कहाँ?" हृदयपाल ने हैरान होकर पूछा।

"नदी।"

"इस वक्त।"

"कहीं तुम्हारी मादा मगरमच्छ और हमारा नर मगरमच्छ आपस में लड़-लड़कर ही न मर गए हों।" चेतन खन्ना ने अपनी चिन्ता व्यक्त की।

"तुम्हारा मगरमच्छ?"

"हाँ, उसी के लिए तो मादा मगरमच्छ को यहाँ लाया गया है।" चेतन खन्ना ने बरसाती कोट पहनते हुए कहा।

"ठहरो। मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।" हृदयपाल भी उठकर खड़ा हो गया।"

वे बाहर आए तो तेज़ बौछार उनके चेहरे पर पड़ीं। गैराज तक पहुँचने में ही बारिश ने उनको तरबतर कर दिया था। चेतन खन्ना ने टॉर्च पैंट की जेब में औंधी रख ली।

"कौन?" रातवाले सन्तरी ने उन पर रोशनी डाली। चेतन खन्ना को पहचानकर उसने टॉर्च बन्द कर दी।

"बिहारी! सब ठीक है न?"

"हाँ, साहब।"

"बिहारी! हम ज़रा मगरमच्छों को देखने जा रहे हैं।"

"सर! मैं भी साथ आऊँ?"

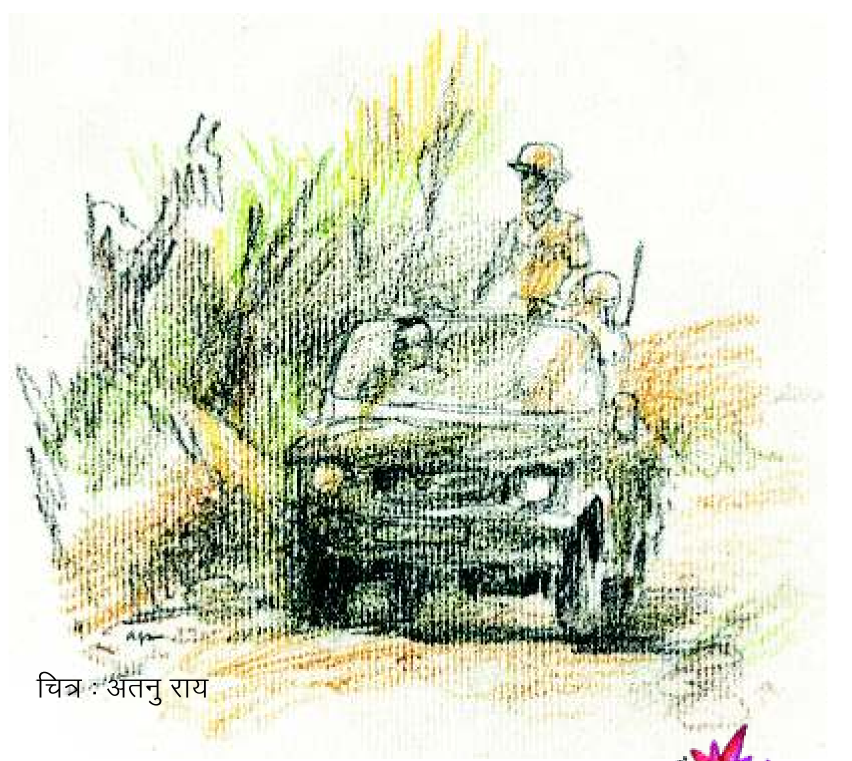

चित्र : अंतनु राय

"नहीं। हमें केवल जाकर ही आना है। वहाँ ज़्यादा समय नहीं लगेगा।"

"ठीक है साहब।"

रात में जंगल का चक्कर लगाना चेतन खन्ना का रोज़ाना का काम था। उसे इस तरह जाते देख सन्तरी रत्तीभर भी हैरान नहीं था।

रात के अँधेरे में जीप हिचकोले खाती चल पड़ी। बादलों की गड़गड़ाहट में जब भी बिजली चमकती तो उस की रोशनी में भीगे पत्ते जानवरों की आँखों की तरह चमकते थे।

उन्हें कई जगह जानवर पेड़ों के नीचे सिकुड़े दिखाई दिए।

"चेतन! हमें कोई हथियार साथ लेकर आना चाहिए था।" हृदयपाल ने जानवरों की ओर देखते हुए अपनी शंका व्यक्त की, "यदि कोई हमला कर दे तो ....।"

"अभी तक हमने अभ्यारण्य में शेर नहीं मँगवाए हैं..." चेतन खन्ना हँस दिया, "वैसे भी यार, डर कैसा? ये जंगली जानवर अब अपना ही परिवार हैं।"

"और मगरमच्छ?"

"उन से तो हम दोनों की रिश्तेदारी है।" बारिश के शोर में उनका ठहाका खो गया। कुछ देर चेतन खन्ना चुपचाप जीप चलाता रहा। एक जगह बीच रास्ते में एक घना पेड़ था। रास्ता बन्द था। उसने जीप रोक दी। उससे आगे नदी तक पैदल ही जाना पड़ेगा।

वे दोनों बारिश में पूरे भीग चुके थे। बरसाती कोट पहने रहने की कोई तुक नहीं थी। दोनों ने बरसाती उतारकर पिछली सीट पर रख दी और चल दिए।

कुछ आगे जाकर चेतन खन्ना एक पगडण्डी पर मुड़ गया। सँकरी होने के कारण वे आगे-पीछे चल रहे थे। धीरे-धीरे चढ़ाई शुरू हो गई। फिसलन होने के कारण उन्हें सँभल-सँभलकर पैर रखना पड़ रहा था। चेतन खन्ना ने पीछे मुड़कर कहा, "तू चिन्ता मत करना। मुझे पता है, मगरमच्छों को हमें कहाँ खड़े होकर देखना है। वहाँ खड़े होने पर मगरमच्छों से कोई खतरा नहीं है।"

बिना कोई उत्तर दिए हृदयपाल उसके पीछे-पीछे चलता गया। आगे जाकर पगडण्डी रुक गई तो चेतन खन्ना रुक गया। हृदयपाल उसके पास जाकर खड़ा हो गया। वे दोनों एक छोटी-सी पहाड़ी पर खड़े थे। उन से लगभग पन्द्रह फुट नीचे नदी बह रही थी। चेतन खन्ना ने इधर-उधर नज़र डाली। हृदयपाल ने झाड़ियों की ओर इशारा किया। चेतन खन्ना ने उधर देखा तो उसका मुँह हैरानी से खुला का खुला रह गया। उसने जल्दी से जेब से टॉर्च निकाली। हृयपाल ने उसका हाथ पकड़कर टॉर्च जलाने से रोक दिया।

चेतन खन्ना ने टॉर्च वापिस जेब में रख ली।

जो दृश्य उन्होंने देखा था, वह उन्हें अचम्भित करने क्के लिए काफी था। दोनों को अभी तक अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। मगरमच्छों की चिन्ता से मन को मुक्त कर उन्हें वापिस लौटना था, पर वे मुग्ध होकर देर तक वहीं खड़े रहे।

चक मक

अगले अंक में समाप्त

Digital India
Power To Empower

डिजिटल इंडिया
डिजिटल मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश में डिजिटल इंडिया की पहल

सहूलियतें आपके लिए :

- डिजिटल लॉकर
- एम.पी. मोबाइल एप के जरिये 120 सेवाएँ
- सरकारी काम-काज में तेजी के लिये एम.पी. ई-मेल सेवा
- 400 से अधिक वर्चुअल क्लास रूम की सुविधा
- 60 लाख, 40 हजार से ज्यादा डिजिटल जाति प्रमाण-पत्र जारी
- लोक सेवा गारंटी अधिनियम में 22 विभाग की 135 सेवाएँ
- एस.एम.एस. गेटवे के जरिये 9 करोड़ से अधिक एस.एम.एस.
- जी.आई.एस. लैब स्थापित।

और अब नई पहल

- कम्प्यूटर दक्षता प्रमाणीकरण परीक्षा (CPCT) की शुरुआत
- ई-शक्ति अभियान के द्वितीय चरण की शुरुआत
- लगभग 1 करोड़ महिलाओं को मिलेगा लाभ
- ई-दक्ष
- ई-ऑफिस
- एक क्लिक पर संपत्ति का पंजीयन
- ई-ऑक्शन से रेत की नीलामी।

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2015

D-77468 दिनांक - 11-9-2015

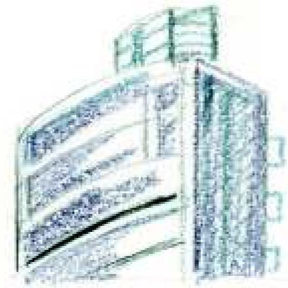

समझ नहीं आता

सतीनाथ षडंगी (सत्यू)

दुनिया के सात आश्चर्यजनक तथ्य...

1. महिलाएँ जो सबसे ज़्यादा काम करती हैं उन्हें कमज़ोर समझा जाता है।

2. जो लोग भोजन पैदा करते हैं, कपड़े तैयार करते हैं, मकान बनाते हैं उन्हें न रोटी हासिल होती न कपड़ा और न मकान।

चित्रः तापोशी घोषाल

3. हज़ारों से सालों से भगवान व भूत की बात होती चली आ रही हैं पर अब तक उनके होने या न होने के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता है।

4. गोरी चमड़ी के लोग खुद को भूरा (Tan) बनाने में लगे रहते हैं और भूरे हिन्दुस्तानी गोरा बनाने के लिए क्रीम घिसते हैं।

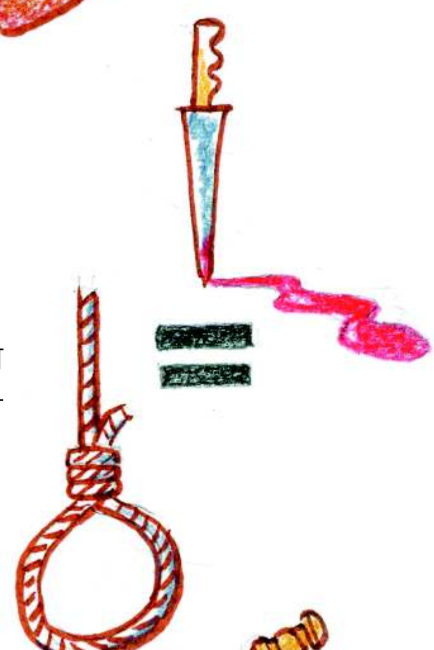

5. आमतौर पर देश के नेता युद्ध के ज़रिए शान्ति लाने की बातें करते आए हैं।

6. अधिकतर देशों में कोई किसी को जान से मार दे तो उसे भी जान से मारने की सज़ा मिलती है।

7. सभी धर्म शान्ति की बात करते हैं और सभी धर्मों की वजह से लड़ाइयाँ होती हैं।

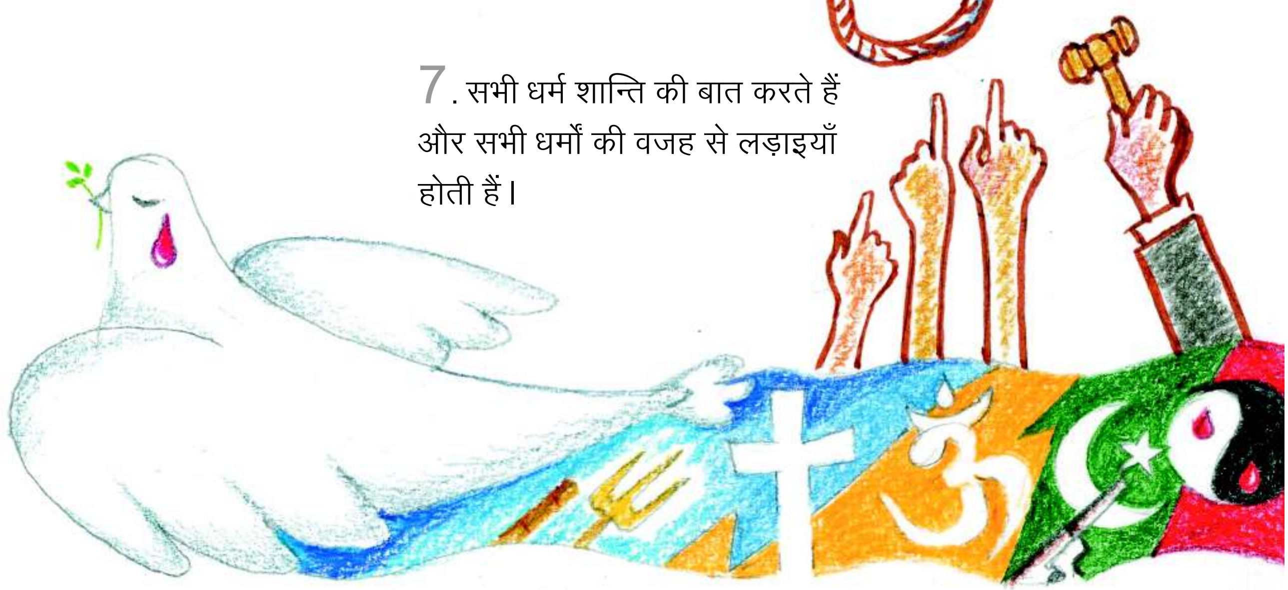

होती गर मैं मुनिया सजीले वन की

फोटोः रूथ रस्तोगी, कनाडा

उस रात आसमान में चाँद खूब रोशन निकला था। हवा में खुनक थी। साफ पता चल रहा था कि दिन छोटे हो चले हैं। मैं समझ गई कि हेमन्त आ गया है। पत्तों के रंग बदलने लगे हैं। हरे से भूरे-सुनहरे-पीले, फिर नारंगी और सुर्ख लाल। कहीं गुलाबी भी। पतझड़ से पहले यह पेड़ों के सजने का त्योहार है। उनके तनों पर आभूषणों की भाँति रंगीन फफूँद उग आई है। रंगीन कुकुरमुत्ते सिर उठा रहे हैं। बीजों को थामें बूढ़ियाँ हवा में सैर कर रहीं हैं। मकड़ियाँ उत्साह से उम्दा रेशम से जाले बुन रही हैं।

यह मेरी पसन्द की ऋतु है। खूब खाने और मुटियाने का मौसम। मज़े का मौसम। सेबों में रंग और मिठास आने लगी है। झाड़ियाँ काली बेरियों से लद गई हैं। कद्दू का स्वाद मुझे नहीं सुहाता। वे हैलोविन के भुतहा कन्दिल बनाने के लिए ही ठीक हैं। हाँ, एकॉर्न- ओक वृक्ष के फल, मैं ढेरों से खा सकती हूँ। अब सर्दियों में यह वन जब बर्फ की रजाई में दुबका रहेगा तब मैं अपने कोटर में लेटे-लेटे मज़े से इनकी दावत उड़ाऊँगी।

जंगल की खूबसूरती देखने के लिए रोज़ ही इंसानों की टोलियाँ चली आ रही हैं। आज कुछ स्कूली बच्चे इधर आ निकले थे। उनकी शिक्षिका मेरी ओर इशारा कर के बता रही थी कि गिलहरियाँ अपने गालों में फल और बीज भर-भरकर उनके घोंसले में ले जातीं हैं। उन्हें पता नहीं कि हमें अच्छे बीजों की परख भी है। ये कौवे, रूक, कनाडाई बत्तखें और उनके जैसे पंछी कितने लाचार हैं। ठण्ड से बचने के लिए उन्हें अपना घर छोड़कर सैकड़ों मील दक्षिण की ओर उड़ जाना पड़ता है। नन्हीं जान मोनार्क तितलियों को भी। सबसे बुरी गत तो मेंढकों की होगी। ठण्ड से अकड़े-जमे दलदल में सोए पड़े रहेंगे बेचारे।

वसन्त में हम फिर साथ होंगे- भालू, हिरण, उदबिलाव और दूर देश गए परिन्दे और नींद से जागे बाशिन्दे। चक मक

(आलेख - जैसा गिलहरी ने **दिलीप चिंचालकर** को बताया।)

पेड़ों के सजने का त्योहार- हेमन्त

द्रिघान्चु

(पेज 37 का शेष भाग)

मंत्री ने पूछा, “द्रिघान्च क्या है?” वह आदमी मंत्री को ठीक करते हुए बोला, “द्रिघान्च नहीं... द्रिघान्चु।” किसी को कुछ पल्ले नहीं पड़ा पर सब बोले, “ओह...।” तब राजा ने पूछा, “यह क्या होता है?” उस आदमी ने कहा, “महाराज मैं तो गँवार हूँ। मुझे क्या मालूम! बस बचपन से द्रिघान्चु सुनते आ रहा हूँ। इसलिए इतना पता है कि जब द्रिघान्चु राजा के सामने आता है तब उसका चेहरा दाढ़ काग की तरह हो जाता है। और जब वो सभा में घुसता है तो सिंहासन के दाहिनी तरफ के खम्बे के ऊपर बैठकर सिर को नीचा करके दक्षिण की तरफ मुँह करके, भृकुटी तानकर कॉह की आवाज़ निकालता है। मुझे तो बस यही मालूम है। पण्डित लोग अवश्य इसके बारे में ज़्यादा जानते होंगे।” यह सुनते ही सारे पण्डित एक स्वर में बोले, “नहीं नहीं उसके बारे में अब तक बस इतना ही पता चल सका है।”

राजा ने कहा, “तुम रो रहे थे? इसलिए कि तुम्हें खबर नहीं दी गई थी? पर यदि तुम होते भी तो क्या कर लेते?” उस आदमी ने कहा, “महाराज, उस बात को कहने से मैं इसलिए डर रहा हूँ क्योंकि लोगों को शायद उस पर यकीन नहीं आएगा।”

राजा ने कहा, “जिसको यकीन नहीं आएगा उसका सिर कलम कर दिया जाएगा। तुम निर्भय होकर अपनी बात कहो।” सभा में हाज़िर सबने, “हाँ हाँ” करते हुए अपनी सहमति जतलाई।

तब उस आदमी ने कहा, “महाराज, मुझे एक मंत्र पता है। और मैं कब से इस उम्मीद में बैठा हूँ कि द्रिघान्चु अगर मुझे दिख जाए तो मैं यह मंत्र उसे सुनाऊँ। ऐसा करने से एक ऐसी अनोखी बात होगी जो किसी को नहीं मालूम। क्योंकि इसके बारे में किसी भी किताब में कुछ नहीं लिखा गया है। हाय रे हाय क्या फिर कभी ऐसा मौका मुझे मिल पाएगा?” राजा ने कहा, “वह मंत्र मुझे बताओ।” उस आदमी ने कहा, “नहीं नहीं। वह मंत्र द्रिघान्चु के सिवा किसी को नहीं कहा जा सकता। मैं एक कागज़ पर लिख देता हूँ आप दो दिन उपवास रखकर तीसरे दिन सुबह उठते ही इसे पढ़ना। यदि आपके सामने कभी दाढ़ काग आए तो उसको यह मंत्र सुना देना। पर खबरदार और कोई यह मंत्र न सुनने पाए। क्योंकि अगर वह दाढ़ काग द्रिघान्चु नहीं हुआ और उसको मंत्र सुनाने के चक्कर में किसी और ने वह मंत्र सुन लिया तो अनर्थ हो जाएगा।”

तब जाके सभा समाप्त हुई। जितने भी लोग अब तक मुँह बाए सुन रहे थे सबने राहत की साँस ली। सब द्रिघान्चु की बात, मंत्र की बात, अनोखे फल मिलने की बात करते-करते घर चले गए।

फिर राजा जी ने दो दिन उपवास रखकर तीसरी सुबह उस आदमी का दिया कागज़ खोलकर देखा। उसमें लिखा था –

पीला हरा ओरांगउटान
ईंट अलंगा गिरे धड़ाम
मुश्किल आसान उड़िया माली
धर्मतल्ला जगह खाली

राजा जी ने बहुत गम्भीरता से इसे रट लिया। तब से जब कभी उन्हें दाढ़ काग दिखता है वो आसपास के लोगों को भगाकर उसे मंत्र सुनाता है और इन्तज़ार करता है कि कुछ अनोखा घट जाए। पर वो दिन है और आज का दिन राजा को द्रिघान्चु कभी नहीं मिला।

सितंबर की चित्र पहेली **हल**

इ	ल्ली			ता	प	मा	पी	
ला		भु	जं	गा		चि		क
य		ट्टा			क	स	र	त
ची	ता		ढ	फ	ली			र
	री	ठा		व्वा		सा	बु	न
पं	ख		त	रा	जू		रा	
जा		दो	ना		ती	रं	दा	ज
ब	बू	ल		घा		गो		हा
		क	पा	स		ली		ज़

फनी पाठशाला

इरफान

मस्ती की पाठशाला

प्यारे दोस्तो

सर्दी की खुनक आने का मतलब है – दशहरा और दुर्गा पूजा का आना। दशहरे के नाम से सबसे पहले ज़ेहन में रावण की तस्वीर आती है। किसने बचपन में रावण का चित्र नहीं बनाया होगा? है न फनी कैरेक्टर? दरअसल बचपन में हम जिस रावण को देखकर बड़े होते हैं बड़े होकर पता चलता है कि रावण दस सिरों वाला नहीं अनेक सिर वाला है। वह कई बार हमारे आसपास मँडराता रहता है। रावण हमारे अन्दर भी होता है। हमारी बुराइयों के रूप में। हर साल हम रस्मी तौर पर रावण को जलाते रहते हैं।

तो इस बार का विषय रहा – रावण। तो उठाओ अपने रंग और ब्रश....

दशहरे की शुभकामनाएँ...

इरफ़ान

– कुश, आठवीं

– सात्विक श्रेष्ठ, आठवीं

– प्रियदर्शिन, आठवीं

– स्नेहिल, आठवीं

सभी कलाकार डीपीएस पटना के हैं।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. / भोपाल / 261 / 2015-17

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादकः सुशील शुक्ल